

प्रकाशक—

श्रीचन्द्रशेखर शास्त्री

ओभाबन्धु-आश्रम

इलाहाबाद

पहिली वार १०००

मुद्रक—

काव्यतीर्थ पं० विश्वम्भरनाथ वाजपेयी

ओङ्कार प्रेस, इलाहाबाद

स्मृति-चिन्ह

बची हुई हैं स्मृति की ये कलियाँ पर लो इनको स्वीकार ।
ठुकराना सब इन्हें जानकर गैरा छोड़ना उपहार ॥

मुकुल



श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

परिचय

इन कविताओं को लेखिका, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म संवत् १९६१ वि० में, नागपथनी के दिन, प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। वे जाति के वैश्य क्षत्रिय थे। सुभद्रा कुमारी अपने माता-पिता की आठवीं सन्तान हैं। इनके अतिरिक्त, इनके दो बड़े भाई और तीन बहनें हैं। उनमें फेवल एक बहन इनसे छोटी हैं। दो भाई और एक बहन का देहान्त हो चुका है।

सुभद्रा कुमारी के पिता बड़े उदार विचारों वाले और प्रतिष्ठित पुरुष थे। उन्हें स्वभाव से ही कविता और नार्ताव से विशेष प्रेम था। उनकी इस सुदृष्टि का पालिका सुभद्रा पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। बचपन में ही उन्हें प्राकृतिक तद्यों को देखने, सृष्टि के मौन्द्य पर विचार करने और तितलियों तथा फूलों के पाँदे दौड़ने-फिरने का व्यसन-सा हो गया था। पढ़ने-लिखने का शौक भी उन्हें छोटी उमर में ही था। परान्त उन्हें अधिरुचि परसन्द था। प्रायः लोग उन्हें पर में कहीं लपकेले सुनसुनाते हुए या सुनसान आगारा ही खोंर ताकते हुए देना करते थे। इनके कवि-जीवन का भविष्य इन्हीं क्षणों में टिप्पणी हुआ था।

वचपन में सुभद्रा कुमारी जिद्दी और निडर स्वभाव की थीं। लेकिन इनकी जिद्द, और लोगों की तरह, सच्ची-भूठी बातों के लिए नहीं हुआ करती थी, बल्कि सत्य और न्याय के लिए होती थी। सत्याग्रह की प्रवृत्ति भी इनमें उसी समय से है। घर की छोटी-मोटी बातों में भी, कभी ये अन्याय-अत्याचार वर्दाशत नहीं कर सकती थीं और न्याय के लिए अड़ जाती थीं।

कविता का बीज इनके अन्दर बाल्यकाल से ही निहित था—ये बहुत ही भावुक, कल्पना-प्रवण और सरल हैं। वचपन में घर के लोग इनके जिद्द करने पर “गोगा आया-गोगा आया” कहकर इन्हें डराया करते थे। इसके साथ ही, ये बात-बात में सब जगह ईश्वर का भी नाम सुनती थीं। इनके मन में वार-वार यह बात उठती थी कि गोगा ईश्वर की तरह कोई चीज़ है, जो दिखलाई नहीं देता। इसीसे एक वार इन्होंने ईश्वर के लिए कहा था—

तुम विन व्याकुल हैं सब लोग।

तुम तो हो इस देश के गोगा ॥

इनका वचपन ऐसी ही मधुर और सरल घटनाओं से भरा हुआ है। जब ये नौ बरस की हुई तो प्रयाग के क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में इनका नाम लिखा दिया गया और

क्रम से इनकी शिक्षा होने लगी। उसी समय से इन्होंने कविताएँ लिखना भी प्रारम्भ कर दिया। स्कूल के जलसों में सदा ही ये कविताएँ पढ़ा करती थीं, जिनमें इनके भविष्य की प्रतिभा का आभास मिलता था।

इनकी शिक्षाएँ इनसे बड़ा स्नेह करती थीं—ये सदा ही स्नेह की छत्र-छाया में रहीं और इसीसे इनका जीवन स्नेह के आलोक से आलोकित हो उठा है। इनकी साक्षा-ठिनियों भी इनसे बहुत दिली-मिली रहती थीं और सदा ही इनसे कुछ सीखने की चेष्टा किया करती थीं। अपने प्रिय-भाषण, नम्रता, मिलनसारि और गहुर स्वभाव के कारण इन्होंने सभी को अपने वश में कर लिया था।

अपने प्यारे देश के प्रति इनके मन में अगाध प्रेम है। इनकी सभी कविताएँ देश-प्रेम की नदिरा से रागयोर हैं। देश के सम्पूर्ण संसार की सभी विभूतियों और प्रलोभनों को ये तुच्छ समझती और अत्यन्त निन्दन पर टुकराती रही हैं।

धीरे-धीरे इनकी कविताएँ स्कूल की सीमा पार करके पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों पर दीप्ति पकने लगीं और इसी समय हिन्दी-संसार ने इनकी कविताओं के रूप में इनके व्यक्तित्व का दर्शन किया। थोड़े ही दिनों में इनकी

मुकुल]

कविताओं की धूम मच गयी और वे जनता में बड़े चाव से पढ़ी जाने लगीं ।

प्रायः सोलह वर्ष की अवस्था में—संवत् १९७६ वि० में— इनका विवाह खण्डवा (मध्यप्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह जी चौहान बी. ए., एल. एल. बी. से हुआ । इस समय भी ये क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में पढ़ ही रही थीं । विवाह के बाद, अपने पति की इच्छानुसार, ये बनारस के थियासोफिकल स्कूल में पढ़ने के लिए चली गयीं । किन्तु, वहाँ के वायुमण्डल में ये अधिक समय तक रह न सकीं । ये हिन्दी-अँगरेज़ी के कुछ राष्ट्रीय दैनिक पत्र पढ़ने के लिए मँगाया करती थीं । स्कूल के अधिकारियों ने यह पसन्द नहीं किया । अपनी उचित और आवश्यक स्वतन्त्रता में बाधा पड़ती देख, तत्काल ही ये स्कूल छोड़कर प्रयाग चली आयीं और फिर क्रास्थवेट स्कूल में पढ़ने लगीं ।

जिस साल ये हाई स्कूल की नवीं श्रेणी की परीक्षा देनेवाली थीं, उसी साल सावरमती के तपस्वी ने स्वाधीनता-संग्राम का विगुल बजाया और तब स्कूल छोड़कर राष्ट्रीय झण्डे के नीचे जा खड़ी होनेवाली ये पहिली महिला थीं । उसी वर्ष इनके पति ने वकालत की परीक्षा पास की थी, लेकिन इनके अनुरोध से उन्होंने भी वकालत न करने का

निश्चय किया। उसके बाद तो इस आदर्श दम्पति ने देश-सेवा को ही अपने जीवन का व्रत बना लिया।

नागपुर के भ्रष्टा-सत्याग्रह के समय ये दो बार गिरफ्तार हुईं और कई दिनों तक जेल में रकयी जाने के बाद छोड़ दी गयीं। उसी समय महात्मा गाँधी के साथ साधरमती में भी कुछ समय तक रहने का इन्हें अवकाश मिला था।

सुभद्रा कुमारी की एक कन्या और दो पुत्र सन्तान हैं। कन्या का नाम सुधा और पुत्रों का जयसिंह और अजय-सिंह हैं। कम से उनकी अवस्था सात वर्ष, दारू वर्ष और एक वर्ष की है। घन्चे नभी रत्न-मुन्दर और एग-हार हैं। उनके भविष्य के सन्धन्ध में सुभद्रा कुमारी को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। ईश्वर करें, इनकी नारी कामनाएँ सफल हों और इनके पुत्र-पुत्री योग्य माना-पिता की योग्य सन्तान बन कर उनके गश और गौरव की वृद्धि कर सकें।

सुभद्रा कुमारी का स्वभाव भावुक, पशों की तरह सरल और मित्रनमर है। ये अत्यन्त हँसमुख और नरफेरा सगान एष्टि से देखने-वाली हैं। नदीय प्रसन्न रहती और अपने व्यवहार से नयनों प्रसन्न करती हैं। एक बार जो इन्से मिलना है, इन्से पाल पीत करना है, वह इनकी सरलता, मित्रनमारी और मादगी का शायद हो जाता है।

मुकुल]

अपने दुश्मनों से भी कठोर व्यवहार करना ये पसन्द नहीं करतीं, इसीसे इनका दुश्मन कोई है ही नहीं ।

इनकी रहन-सहन सादी और जीवन विलकुल सरल है । आडम्बर और दिखावट से इन्हें विशेष चिढ़ है । अभिमान इन्हें छू भी नहीं गया । स्वयं जैसी सरल और उदार हैं, दूसरों को भी ठीक वैसा ही समझती हैं ।

सुभद्रा कुमारी आदर्श नारी हैं । हमने सुख-दुख में समान रूप से प्रसन्न रहते हुए इन्हें देखा है ।

ये किसी के कहने से या किसी समस्या पर कविताएँ नहीं लिख सकतीं । इनकी कविता की भाषा, इनका हृदय है । यही कारण है कि इनकी कविताएँ बहुत मार्मिक, चुटीली और सरल होती हैं । इनकी कविताओं में पाण्डित्य और शब्दाडम्बर नहीं होता, हृदय से निकली हुई सीधी कविता होती है, जो हृदय के तारों से टकराकर झनझना उठती है । पाठक इस पुरतक की कविताओं में पग-पग पर इस सत्य का अनुभव कर सकेंगे ।

ईश्वर सुभद्रा जी को चिरायु करे !

ओम्नात्रन्धु आश्रम,
इलाहाबाद

श्रीप्रफुल्लचन्द्र ओम्ना 'मुक्त'

सुकुल के नाम से अपनी कविताओं का संग्रह हिन्दी-संसार के सामने रखने में मुझे सहोच से अधिक जो प्रसन्नता ही हो रही है, उसका एक कारण है। ये सभी कविताएँ मेरे जीवन के उपःकाल में लिखी गयी थीं। आज तो उन दिनों की याद करना भी अपराध है; आज ये दिन अतीत के अन्धकार में गये हैं—जैसे सपना हो गये हों ! मैं किन्ती से क्या कहूँ कि ये दिन कैसे थे ?

आज संसार के महापुरुषों से ऊपर मेरे कवि-मनो ने विधान ले लिया है। जब कभी कविता का नाम सुनती हूँ, नाखून होता है जैसे दूर से आने वाली कोई हृदयी हुई रागिनी सुन रही हूँ, जैसे कोई भूती हुई पात याद कर रही हूँ। अनेक बार उन हों जब ही कड़ों की तरह

मुकुल]

मन में उठती हैं और न-जाने किस अज्ञात तट से टकराकर शून्य में विलीन हो जाती हैं। मैं सोचा करती हूँ, क्या कभी फिर भी मैं कविता लिख सकूँगी ? लेकिन, इस प्रश्न का उत्तर कहाँ मुझे मिलता है !

फिर, एकवार सोचती हूँ, जो स्मृतियाँ अतीत के अन्धकार में छिप गयी थीं, जिन्हें मैं भी भूल-सी ही गयी थी, हृदय की उन चिनगारियों को स्मृति की फूँक मार कर जगाने में कौन सुख है ? यह इतना आयोजन, इतना आडम्बर जो किया जा रहा है, इसका क्या अभिप्राय है ? मुझे तो इसका भी कोई समुचित उत्तर नहीं मिलता ।

मैंने कभी यह इच्छा प्रकट नहीं की कि मेरी कविताएँ इकट्ठी की जायँ और उनकी पुस्तक तैयार हो । यह बात तो कभी मैंने सोची भी नहीं थी कि कभी कोई इन्हें यह रूप देगा और न यह समझ कर मैंने कोई कविता ही कभी लिखी है । किन्तु, अनेक वार जो बात सोची-समझी नहीं जाती, वही सामने आती है । इन कविताओं के सम्वन्ध में भी यही हुआ । मेरे भाई प्रफुल्ल के आग्रह, अनुरोध और परिश्रम से आज मेरी कविताएँ, पुस्तक-रूप में, साहित्य-पारखियों के सामने जा रही हैं ।

इन कविताओं को यह रूप देने के लिए मैंने कुछ भी

नहीं किया। मेरे पास अपनी कविताओं का न तो कोई संग्रह था और न मुझे ठीक-ठीक यहो याद था कि मेरी कौन कविता कब, कहाँ छपी है। मेरी कविताओं के प्रति प्रफुल्ल का जो अकपट स्नेह है, यह संग्रह उसी का परिणाम है। प्रफुल्ल ने ही, न जाने कहाँ-कहाँ से, इतनी कविताएँ इकट्ठी की हैं, इनका क्रम लगाया है; और इन्हें हर तरह से सजाने का आयोजन किया है। मैं तो केवल अपने उस भाई के इस कार्य को स्नेहभरी आँखों से देखती-भर रही हूँ।

आज, जब यह पुस्तक साहित्य के बाजार में जाने के लिए तैयार है, मुझे कुछ भय-न्ता हो रहा है। लेकिन, फिर सोचती हूँ, मुझे भय किस बात का? कविताएँ अच्छी हों या बुरी, मेरी हैं और मुझे प्यारी भी बहुत हैं। मैं इनके बारे में कुछ कहना नहीं चाहती। चाहे भी तो कुछ कह नहीं सकती। और इसीलिए, गौन रह कर ही, प्रसन्नता पूर्वक, यह पुस्तक जनता के हाथों में देती हूँ।

३६, राइट टाउन, जयलपुर

१ नवम्बर ३०

— सुभद्रा कुमारी

सिंहावलोकन

चेस्टरटन महाशय ने हार्डी की आलोचना करते हुए कहा था कि कला का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह हमें वस्तुओं की वास्तविक स्थिति का ज्ञान करा दे। वस्तुओं की सत्यता का दिग्दर्शन कराना ही कला का ध्येय हो।

चेस्टरटन महाशय के व्यक्तिगत विचारों ने ही कदाचित् उन्हें ऐसा कहने के लिए वाध्य किया हो। वास्तव में कला का आदर्श सत्य से कुछ भिन्न है। यद्यपि आजकल के आलोचक सत्य, शिवं, सुन्दरम् को ही कला की परिभाषा मानते हैं, पर वे यदि वस्तुओं के अन्तरतम स्थान में पहुँचने का कष्ट उठावें तो उन्हें अपनी परिभाषा परिष्कृत

करनी पड़ेगी । मैं तो कला का अस्तित्व वहाँ तक मानता हूँ, जहाँ तक वह किसी कलाकार के हृदयस्थ किसी भाव-विशेष से सम्पर्क रखती है । और जब वह भाव-विशेष प्रकाश में आता है तो निष्पन्न एवं स्पष्ट रूप से । हम कलाकार से प्रत्येक स्थिति में वह निष्पन्न भाव माँग सकते हैं, सत्य नहीं । उसका एक कारण है । हम नहीं कह सकते कि वास्तविक सत्य का अस्तित्व और उसकी अन्तिम सीमा कहाँ है ! जिसे हम आज सत्य का पूर्ण प्रमाण मानते हैं, सम्भव है, फल वही बालकों की मूर्तिका का सामान मान लिया जाय । इसलिए कला को मैं वह विशद चित्र मानता हूँ, जिसमें कलाकार के हृदय की परिस्थिति स्पष्ट रूप से अंकित रहती है । जब कलाकार प्रेमी का रूप रखता है तो उसके सामने समुद्र उसकी मुत्कान के साथ समुद्रावा है ; वायु उसकी प्रेमिका का नाम उसके पानों में कह जाती है ; तारे उसे मौहार्द की ज्योतों से देखते हैं । वही कलाकार जब वियोगी बनकर दुखी होता है तो वही समुद्र उसे उदास और निर्दय गालन होता है ; वही वायु उसके उदासियों की हँसी उड़ाती है ; और वही तारे उन्हीं और नमवेदना-रहित मूल्य नेत्रों से देखते हैं । दोनों ही परिस्थितियों कला-रूप की पूर्ण परिष्कारिता है ; दोनों ही में कला

का अस्तित्व है पर उनकी सत्यता में कितना अन्तर है—कितना भेद है ! यही कारण है कि कला में सत्य का उतना महत्व नहीं है, जितना परिस्थिति का। किसी कवि के हृदय में परिस्थिति की ही प्रधानता अधिक रहती है, सत्य की नहीं। हाँ, पहिले उस कवि को पूर्ण कलाकार होना चाहिए।

परिस्थितियों की हिलोर में कवि की कविता इस प्रकार चलती है, जैसे कोई मन्त्र-मुग्ध। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि कविता से ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जो सुनने वालों को मुग्ध करती है; पर मतलब यह है कि कविता स्वयं मन्त्र-मुग्ध की भाँति अग्रसर होती है। उसका प्रत्येक शब्द मतवाला होता है। उन शब्दों के चारों ओर ऐसे वातावरण की सृष्टि होती है कि उसमें मुग्धता के सिवाय और कुछ भी नहीं होता। शब्दों की ध्वनि में मुग्धता होती है और उनके पारस्परिक सम्बन्ध में भी। ऐसी स्थिति में उनके भीतर बैठे हुए भाव भी मतवाले होते हैं। कल्पना में भी मादकता रहती है और वह मदिराची की भाँति मुग्ध-गति से चलती है।

उस कल्पना में कवि का अनुभव अन्तर्हित होता है। वह अनुभव भी उत्कृष्ट रूप का होता है। उसे जानकर हम

कुछ चरणों के लिए स्वयं कवि बन जाते हैं। कवि ने जिस वस्तु का वर्णन किया है, उसका भाव हमारे हृदय में उत्पन्न नहीं होता, बल्कि वह कविता स्वयं भाव का रूप बन जाती है। शब्दों में इतना जोर रहता है कि वे हमारे व्यक्तित्व को बदल देते हैं। कविता भाव को नहीं जगाती, बल्कि वह स्वयं भाव बन कर सामने आ खड़ी होती है। यह कविता का कितना उत्कृष्ट रूप है! लेकिन यह बात तब तक नहीं होती, जब तक कि उन भावों में कवि का उन्माद और अनुभव उसी प्रकार न मूले, जिस प्रकार सजीले पालने में मुकुमार शिशु !

कविता के इन्हीं तीन तत्वों में मैंने श्रीमती सुभद्रा कुमारी की कविता का शृङ्गार पाया है। हृदय की परिस्थितियों का फला-रूप, शब्दों और भावों में भावकता और जीवन का वास्तविक अनुभव, इन्हीं तीन धाराओं में सुभद्रा जी की कविता का प्रवाह होता है। तीन धाराओं की यही त्रिवेणी हृदय में आनन्द का आविर्भाव करती है।

सुभद्रा जी की कविता में हमें हृदय की परिस्थितियों के जितने चित्र मिलते हैं, उन चित्रों में स्वभाविकता, सरलता और सौन्दर्य है। ऐसे चित्रों में भावकता हमें उसी प्रकार मगनी देती है, जिस प्रकार सरिता की लहर

अपने तट को। उस थपकी से एक ध्वनि उठती है।
उससे हृदय में एक प्रकार की अशान्ति होती है, पर होती
है वह सुखदायिनी। हृदय कुछ क्षणों के लिए सिहर उठता
है; भय से नहीं, अशान्ति से! हम फिर आँखें बन्द कर
उस मीठी अशान्ति में भूलने लगते हैं:—

तुम मुझे पूछते हो जाऊँ,
मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो।

‘जा.....’ कहते रुकती है जवान,
किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो ॥

मैं सदा रूठती ही आयी,
प्रिय तुम्हें न मैंने पहिचाना।

वह मान वान-सा चुभता है,
अब देख तुम्हारा यह जाना !!

(चलते समय)

यहाँ हृदय की भावनाओं के स्वर्ण-पंखों ने व्यर्थ
की उड़ान नहीं भरी। स्वाभाविकता है, सरलता है,
सौन्दर्य है—हमें हृदय की गहरी से गहरी आकांक्षा का एक
चित्र मिलता है, जिसमें परिस्थिति का बहुत सुन्दर रङ्ग भरा
गया है। प्रियतम के ‘चलते समय’ उठी हुई स्वाभाविक
भावना ने हृदय को उस तीर से वेध दिया है, जिसमें मधुर
पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

सुभद्रा कुमारी की कविता में एक प्रकार की मादकता है, मुग्धता है, प्रत्येक शब्द विजली से भरा गया है। वसीसे भावना जीवित होकर, हमारे हृदय में प्रवेश कर, हमारी भावना को जगाती है। हमारी भावना भी शक्ति-सम्पन्न होकर कविता की भावना से मिल जाती है और हमारे हृदय की भावनाएँ श्रीमती सुभद्रा कुमारी जी के हृदय की भावनाओं का रूप रख लेती हैं। ऐसी स्थिति में भावना भावना ही रहती है, कल्पना का रूप नहीं रखती। यह पृथ्वी की वस्तु होती है, आकाश की नहीं। उसमें नक्षत्र की मुग्धता को अपने पास बुलाने की शक्ति आ जाती है। 'दिल में एक चुभन-सी' पैदा हो जाती है।

घड़िन आज फूली समाती न मन में । .

तझिन् आज फूली समाती न मन में ॥

घटा है न फूली समाती गगन में । .

लता आज फूली समाती न मन में ॥

कहीं रागियों हैं, पनक है कहीं पर,

कहीं फूँद है, पुष्प प्यारे मिले हैं ।

ये प्यारे हैं रागी, सुरार है फूलो,

प्यारे उन्हें जिनको भाई मिले हैं ॥

मैं हूँ वहिन किन्तु भाई नहीं है ।
 है राखी सजी पर कलाई नहीं है ॥
 है भादों घटा किन्तु छाई नहीं है ।
 नहीं है खुशी पर रुलाई नहीं है ॥

इन पंक्तियों के द्वारा कितने भावों की मादकता को, कितने विचारों के पागलपन को, एक बार ही, एक ही भावना से बाँध कर उत्सुकता के उदधि में फेंक दिया गया है !! प्रत्येक शब्द जीवित हो कर बोल रहा है । हृदय प्रफुल्लित हो कर आलोकित हो जाता है, मानो उस पर हीरक-ज्योति की रश्मियाँ एक साथ पड़ी हों ।

इस मादकता में अनुभव का मूल्य अधिक है । श्रीमती सुभद्रा जी ने असहयोग और सत्याग्रह में विशेष भाग लिया है । वे राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत हैं । उनके हृदय में मातृ-भूमि और देश के जो विचार हैं और फलतः उन्हें उन विचारों से जो अनुभूति हुई है, उसका प्रतिबिम्ब स्पष्ट-रूप से उनकी कविताओं में देखा जाता है ।

उनकी अधिकांश कविताएँ राष्ट्रीय हैं, क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय भाव-मय है । सद्यः अनुभव ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही बना दिया है ।

राष्ट्रीय कविताओं की उत्कृष्टता की दृष्टि से मैं इनकी कविताओं को 'एक भारतीय आत्मा' की कविताओं से किसी प्रकार हीन नहीं समझता । एक बात और है । इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीरभाव के साथ ही साथ भावुकता भी इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुतः देश के मूल्य के बराबर हो जाता है । 'मालु-मन्दिर' में साहित्यिकता और देशभक्ति की कैसी मनोहर 'गंगा-जमुनी' है :—

एक ओर यदि—

देव ! वे कुर्छे उजड़ी पड़ीं,

और वह कोकिल उड़ ही गया ।

हटार्यो हमने लाखों धार,

किन्तु वे घड़ियों जुड़ ही गयीं ॥

है, तो दूसरी ओर—

विजयिनी नाँ के धार सुपुत्र

पाप ने असहयोग लें टान ।

गुँजा डालें स्वराज्य यो तान

और सच हो जायें पतिदान ॥

को दर्प-भरी पवनि गूँझती है । इन्हीं दोनों भावों के

मुकुल]

मिश्रण ने सुभद्रा जी की कविता को बहुत ऊँचा उठा दिया है। 'भाँसी की रानी' कविता में बुन्देलों और हरबोलों के बदले प्रत्येक शब्द वह पुरानी कहानी इतने तीव्र भाव से कहता है कि हृदय तड़प उठता है, विचार-धारा में तूफान आ जाता है, आकांक्षा अशान्ति के झकोरों में भूमने लगती है—और ताल देकर समीप की वायु भी गूँज उठती है—

खूब लड़ी मरदानी वह तो भाँसी वाली रानी थी !

देशभक्ति के भावों ने सुभद्रा कुमारी जी को वह शक्ति दे दी है, जिससे वे देश की अशान्ति की चित्रावली में मनोहर रङ्ग भरती हैं। ऐसा रङ्ग, जिसमें उनके आँसू का पानी घुला हुआ है। 'विस्मृत की स्मृति' में हृदय की अशान्ति ने कितने सुन्दर व्यंग का रूप लिया है—

उधर तुम कहलाते गोपाल,

इधर ये गौएँ दिन-दिन कटें।

कहो, तुमही कह दो गोपाल,

तुम्हें अब कौन नाम से रटें ?

प्रेम में भी उनकी अनुभूति कुछ कम गहरी नहीं है। साधारण घटनाओं में भी वे जीवन का सौन्दर्य देखती हैं।

प्रेम की चुटकियाँ और व्यंग बहुत ही हृदयमाही हैं। दो-एक उदाहरण पर्याप्त होंगे—

बहुत दिनों तक हुई परीक्षा,
अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी, बोल तो लिया करो तुम,
चाहे मुझ पर प्यार न हो ॥

× × ×

पूजा और पुजापा प्रभुवर
इसी पुजारिन को समन्तो !
दान-दक्षिणा और निष्ठावर
इसी भिषारिन को समन्तो !!

× × ×

मुझे मुला दो या ठुकरा दो, फर लो जो कुछ भावे ।
लेकिन यह आशा का अंकुर नहीं सूखने पावे ॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छँटि ।
अवसर पाकर पृष्ठ बने यह, दे फल शायद नींटे ॥

कितनी विदग्धता है, प्रेमी हृदय की कितनी गहरी अभिव्यक्ति है ! इसी प्रकार इनकी सभी कविताओं में दुःख-न-दुःख समस्कार और कवित्व है। इन पुस्तक के पाठक स्वयं इनका अनुभव करेंगे।

मुकुल]

इस कविता-संग्रह में सर्वत्र सरलता का साम्राज्य है। इस सरलता से कहीं-कहीं हानि भी हुई है। कुछ कविताएँ बहुत ही साधारण हो गई हैं। 'शिशिर-समीर' में कोई नूतनता नहीं है, उसी प्रकार 'जल-समाधि' के लम्बे विस्तार में भावना विखर-सी गई है। कल्पना का विकास उच्छृङ्खल होकर सौन्दर्य-सीमा के भीतर नहीं आ सका।

हम सुभद्रा जी की कविता का आदर करते हैं। उसमें मादकता है, सौन्दर्य है और हृदय की अनुभूत-परिस्थितियों की मनोहर भाँकी है। सुभद्रा जी हिन्दी-साहित्य की कोकिला हैं, जो भावना की ऊँची डाल पर बैठकर गाती हैं। उस समय हृदय-मुकुल विकसित हो चठता है।

हिन्दी-विभाग
प्रयाग-विश्व-विद्यालय
१४-११-३०

रामकुमार वर्मा एम० ए०
(हिन्दी प्रोफेसर)

कविताएँ

फूल के प्रति	१
सुरमाया फूल	२
कलह-कारण	३
चलते समय	४
भ्रम	५
समर्पण	६
ठुकरा दो या प्यार करो	८
स्मृतियाँ	११
जाने दे	१४
शिशिर-समीर	१७
पारितोषिक का मूल्य	२०
चिन्ता	२३
प्रियतम से	२४
मानिनि राधे !	२५
आहत की अभिलाषा	२९
जल-समाधि	३१
मेरा नया बचपन	३६
बालिका का परिचय	४२

इसका रोना	४४
भाँसी की रानी	४७
राखी की चुनौती	५६
विजयी मयूर	६१
जलियाँवाला बाग में वसन्त	६३
मेरी कविता	६५
राखी	७०
विजयादशमी	७३
मातृ-मन्दिर में	७५
मातृ-मन्दिर में	८०
मातृ-मन्दिर में	८३
झण्डे की झुलत में	८६
मेरी टेक	८७
विदाई	८८
विदा	९०
स्वागत	९३
स्वागत-गीत	९७
स्वदेश के प्रति	९९
मत जाओ !	१००
विस्मृत की स्मृति	१०२
परिशिष्ट (शब्दार्थ)	१०५

मुकुल

फूल के प्रति

छाल पर के सुरन्ताए फूल !
हृदय में मत फेर वृथा गुमान ।
नहीं है सुमन कुञ्ज में अभी
इसी से है तेरा सम्मान ॥

मधुप जो फरते अनुनय विनय
दने तेरे परियों के दाम ।
नयी फलियों ओ गिरती देख
नहीं क्षायेंगे तेरे पास ॥

सहेगा यह पौने अपमान ?
कटेगा वृथा हृदय में शूल ।
मुलाका है, मत करना गरु
छाल पर के सुरन्ताए फूल ॥

मुरझाया फूल

यह मुरझाया हुआ फूल है,
इसका हृदय दुखाना मत ।
स्वयं विखरने वाली इसकी
पद्मड़ियाँ विखराना मत ॥
जीवन की अन्तिम घड़ियों में
देग्यो, इसे रुलाना मत ।
गुजरो अगर पास से इसके
इसे चोट पहुँचाना मत ॥

अगर हो सके तो ठण्डी—
धूँदें टपका देना प्यारे ।
जल न जाय सन्तप्त हृदय
शीतलता ला देना प्यारे ॥

कलह-कारण

कड़ी आराधना करके बुलाया था उन्हें मैंने ।
 पदों को पूजने के ही लिए था आधना मेरी ॥
 तपस्या नेम व्रत करके रिक्ताया था उन्हें मैंने ।
 पधारे ढंग, पूरी ही गयी आराधना मेरी ॥

उन्हें सहना निहारा सामने, नल्लोच हो आया ।
 मुँदी अँगो सहज ही लाज ने नीचे मुकी थी मैं ॥
 कर्तव्य प्राणधन ने वह हृदय में मोच हो आया ।
 यही गुण घोल दें पहाले, प्रतीक्षा में रुकी थी मैं ॥

अपमानक स्थान पूजा का हुआ, मूट अँगो जो मोती ।
 नहीं देखा उन्हें, पर सामने सूनी दुर्ग देगी ॥
 हृदयधन शक्य दिने, मैं लाज ने उनसे नहीं पायी ।
 गया सर्वस्व, परने आरसो दुनी मुठी देगी ॥

चलते समय

तुम मुझे पूछते हो "जाऊँ" ?
मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो !
'जा...' कहते रुकती है जवान
किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो ?

सेवा करना था जहाँ मुझे
कुछ भक्ति-भाव दरसाना था ।
उन कृपा-कटाक्षों का बदला
बलि होकर जहाँ चुकाना था ॥

मैं मद्रा रूठनी ही आयी,
प्रिय ! तुम्हें न मैंने पहिचाना ।
बद मान वाण-मा चुभता है,
अप्य देग तुम्हारा बद जाना ॥

भ्रम

देवता थे वे, दुष्ट दर्शन, अलौकिक रूप था ।
देवता थे, मधुर सम्मोहन स्वरूप अनूप था ॥
देवता थे, देखते ही बन गयी थी भक्त में ।
हो गयी उस रूप-लीला पर अटल आसक्त में ॥

देर क्या थी ? यह मनोमन्दिर यहाँ तैयार था ।
वे पधारें यह अगिला जीवन बना शौदार था ।
भौक्तियों की धूम थी, जगमग हुआ संसार था ।
ना गयी सुख नींद में आनन्द अपरम्पार था ॥

किन्तु उठकर देवता हैं, जन्तु है जो पृथ्वी थी ।
मैं जिसे समझे हुए थी देवता, वह नृति थी ॥

समर्पण

सूखी सी अधखिली कली है
परिमल नहीं, पराग नहीं ।
किन्तु कुटिल भौरों के चुम्बन-
का है इस पर दाग़ नहीं ॥

तेरी अतुल कृपा का बदला
नहीं चुकाने आयी हूँ ।
केवल पूजा में ये कलियाँ
भक्ति-भाव से लायी हूँ ॥

प्रणय-जल्पना चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएँ प्यारी ।
मृदु अभिलाषा, विजयी आशा
सजा रही थीं फुलवारी ॥

किन्तु गर्व का झोंका आया
यदपि गर्व का था तेरा ।
उजड़ गयी फुलवारी नारी
धिगड़ गया सब फुलू मेरा ॥

बची हुई स्मृति की ये कलियों
मैं घटोर फर लायी हूँ ।
तुम्हें सुमाने, तुम्हें रिक्ताने
तुम्हें मनाने आयी हूँ ॥

प्रेम-भाव ने ही अधवा हो
दुःख-भाव ने ही न्योधार ।
दुःखरत्ना मत, इसे जालर
मेरा टोटा-सा इन्कार ॥

ठुकरा दो या प्यार करा

देव ! तुम्हारे कई उपासक
कई ढङ्ग से आते हैं ।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे
कई रङ्ग के लाते हैं ॥

ठुकरा दो या प्यार करो

धूमधाम से साजयाज से
मन्दिर में वे आते हैं ।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ
लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं ॥

मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी
जो कुछ साध नहीं लायी ।
फिर भी साहस कर मन्दिर में
पूजा करने को आयी ॥

भूप दीप नैवेद्य नहीं है
काँफ़ी का शृङ्गार नहीं ।
हाथ ! गले में पहिनाने को
फूलों का भी धार नहीं ॥

मैं कैसे स्तुति करूँ तुम्हारी ?
ते मर में नाधुर्य नहीं ।
मन का भाव प्रकट करने को
बाहरी में पाधुर्य नहीं ॥

मुकुल

नहीं दान है, नहीं दक्षिणा
खाली हाथ चली आयी ।
पूजा की विधि नहीं जानती
फिर भी नाथ ! चली आयी ॥

पूजा और पुजापा प्रभुवर !
इसी पुजारिन को समझो ।
दान दक्षिणा और निछावर
इसी भिखारिन को समझो ॥

मैं उन्मत्त, प्रेम का लोभी
हृदय दिखाने आयी हूँ ।
जो कुछ है, बस यही पास है,
इसे चढ़ाने आयी हूँ ॥

चरणों पर अर्पित है, इसको
चाहो तो स्वीकार करो ।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो या प्यार करो ॥

स्मृतियाँ

क्या कहते हो ? किसी तरह भी
 भूख और भुलाने दूँ !
 गत जीवन को तरल मेघ-सा,
 स्मृति-नभ में मिट जाने दूँ !!

शान्ति और सुख ने मे
 जीवन के दिन शेष बिताने दूँ !
 कोई निश्चित मार्ग पनाकर
 पल्लू, तुम्हें भी जाने दूँ !!

पैसा निश्चित मार्ग, हृदय-धन !
 समस्त नहीं पाती हूँ मैं ।
 यही समझने एक पार फिर,
 समा परो, आती हूँ मैं ॥

जहाँ तुम्हारे चरण वहीं पर,
पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं ।
मेरा निश्चित मार्ग यही है,
ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं ॥

भूलो तो सर्वस्व ! भला वे
दर्शन की प्यासी घड़ियाँ ।
भूलो मधुर मिलन को, भूलो
वातों की उलझी लड़ियाँ ॥

भूलो प्रीति-प्रतिज्ञाओं को,
आशाओं, विश्वासों को ।
भूलो अगर भूल सकते हो,
आँसू और उसाँसों को ॥

मुझे छोड़कर तुम्हें प्राणधन !
सुख या शान्ति नहीं होगी ।
यही बात तुम भी कहते थे,
सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी ॥

स्मृतियाँ

मुख को मधुर बनाने वाले,
दुख को भूल नहीं सकते ।
मुख में कसक उठूँगी मैं प्रिय !
मुझको भूल नहीं सकते ॥

मुझको कैसे भूल सकोगे,
जीवन-पथ दर्शक मैं थी ।
प्राणों की थी प्राण, हृदय की,
सोचों तो, हृदयक मैं थी ॥

मैं थी उज्वल स्फूर्ति, पूर्ण
थी प्यारी अभिलाषाओं की ।
मैं ही तो थी नूतन तुम्हारी
बढ़ी बढ़ी आशाओं की ॥

आशा, पलों, पल जासोगे,
मुझे खड़ेली मोड़ सते !
कोई छुए हो हृदय-पथ में,
नहीं मरणों को सते ॥

जहाँ तुम्हारे चरण वहीं पर,
पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं।
मेरा निश्चित मार्ग यही है,
ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं ॥

भूलो तो सर्वस्व ! भला वे
दर्शन की प्यासी घड़ियाँ।
भूलो सधुर मिलन को, भूलो
बातों की उलझी लड़ियाँ ॥

भूलो प्रीति-प्रतिज्ञाओं को,
आशाओं, विश्वासों को।
भूलो अगर भूल सकते हो,
आँसू और उसाँसों को ॥

मुझे छोड़कर तुम्हें प्राणधन !
सुख या शान्ति नहीं होगी।
यही बात तुम भी कहते थे,
सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी ॥

स्मृतियाँ

सुख को मधुर बनाने वाले,
दुख को भूल नहीं सकते ।
सुख में कसक उठेगी मैं प्रिय !
मुझको भूल नहीं सकते ॥

मुझको कैसे भूल सकोगे,
जीवन-पथ दर्शक मैं थी ।
प्राणों की थी प्राण, हृदय की,
सोचो तो, हर्षक मैं थी ॥

मैं थी उज्वल स्फूर्ति, पूर्ति
थी प्यारी अभिलाषाओं की ।
मैं ही तो थी मूर्ति तुम्हारी
बड़ी बड़ी आशाओं की ॥

आओ, चलो, फाँट जाओगे,
मुझे अकेली छोड़ सते !
कैसे हुए हो हृदय-बाध में,
नहीं सकोगे तोड़ सते ॥

जाने दे

कठिन प्रयत्नों से सामग्री
मैं बटोर कर लायी थी ।
बड़ी उमङ्गों से मन्दिर में,
पूजा करने आयी थी ॥

✓ पास पहुँच कर जो देखा तो,
आहा ! द्वार खुला पाया ।
जिसकी लगन लगी थी उसके
दर्शन का अवसर आया ॥

दर्प और उत्साह घड़ा, कुछ
 लज्जा, कुछ मझोच हुआ।
 उत्सुकता, व्याकुलता कुछ कुछ,
 कुछ सम्भ्रम, कुछ तोच हुआ ॥

मन में था विश्वास कि उनके
 श्रवण तो दर्शन पाऊँगी।
 प्रियतम के चरणों पर अपना
 मैं सर्वस्व चढ़ाऊँगी ॥

फाड़ दूँगी अन्तरात्म की, मैं
 उनसे नहीं दिपाऊँगी।
 मानिनि हैं, पर नाम मजूँगी,
 चरणों पर दलि जाऊँगी ॥

पूरी हुई साधना मेरी,
 सुनारी परमात्मद गिला।
 शिष्ट पदी तो हुआ परे जया
 मन्दिर का पद पद गिला ॥

मुकुल

निष्ठुर पुजारी ! यह क्या ? मुझ पर
तुम्हें न तनक दया आयी ?
किया द्वार को बन्द हाय ! मैं
प्रियतम को न देख पायी !!

करके कृपा पुजारी ! मुझको
ज़रा वहाँ तक जाने दे ।
मुझको भी थोड़ी सी पूजा
प्रियतम तक पहुँचाने दे ॥

छूने दे उनके चरणों को,
जीवन सफल बनाने दे ।
खोल, खोल दे द्वार, पुजारी !
मन की व्यथा मिटाने दे ॥

बहुत बड़ी आशा से आयी हूँ,
मत कर तू मुझे निराश ।
एक बार, वस एक बार तू
जाने दे प्रियतम के पास ॥

शिशिर-समीर

शिशिर-समीरण ! किम धुन में हो,
फहो किधर तुम जाती हो ?
घोंरे-धोंरे फ्या फहती हो ?
या यों हो धुन जाती हो ॥

क्यों नुश हो ? फ्या धन पाया है ?
क्यों हलती इठलती हो ?
शिशिर-समीरण ! मय पक्या हो,
किने होंने जाती हो ?

पारितोषिक का मूल्य

मधुर मधुर मीठे शब्दों में
मैंने गाना गाया एक ।
वे प्रसन्न हो उठे खुशी से
शाबासी दी मुझे अनेक ॥

निश्छल मन से मैंने उनकी
की सभक्ति सादर सेवा ।
मिला मुझे उनसे कृतज्ञता—
का सुमधुर मीठा मेवा ॥

सुन्दर वस्त्राभूषण ले
मैंने रुचि से शृङ्गार किया ।
मेरी सुन्दरता का उनने
भट तस्वीर उतार लिया ॥

प्रेमोन्मत्त हो गयी, मैंने
उन्हें प्रेम निज दिखलाया ।
उसी समय बदले में उनसे
एक प्रेम-चुम्बन पाया ॥

पारिजातिक का मूल्य

शावासा, छतशता अथवा
उस तस्वीर छिपाने से ।
हुई नुशी से मैं पागल-सी
प्रिय का चुम्बन पाने से ॥

घटने लगा किन्तु धीरे-धीरे
वाट पागलपन भेरा ।
उतर गया वाट नगा, हो गया
हुल्ला उदास-सा मन भेरा ॥

गाना एक शीर गाया, अथ
फेबल मन पहलाने को ।
जन-मेवा के लिए बल पड़ी
भरसक पट्ट मिटाने को ॥

हो शहर भी बिया भेने
पत्नी प्रेम दीवानी भी ।
देगन अथ मैं अरि प्रमद को
शीर अधिका हरपानी भी ॥

मुकुल

छिपा हुआ कोई सुनता था
सुललित मधुर गीत मेरा ।
सेवा औ शृङ्गार प्रेम था
जिसमें बढ़ता बहुतेरा ॥

सुनने वाला बोला किन्तु न
शब्द सुनाई देते थे ।
करते हुए प्रशंसा विकसित
नेत्र दिखाई देते थे ॥

“पहले में यह बात नहीं थी,
है यह तो अपूर्व सङ्गीत ।”
मेरी प्रसन्नता ने प्रतिध्वनि--
किया कि प्यारे वह सङ्गीत--

चुका रही थी शावासी के
पुरस्कार का कोरा दाम ।
वही न्यूनता ही थी वस
उस पुरस्कार का सच्चा दाम ॥

चिन्ता

लगे जाने, हृदयधन से—
 फटा मैंने कि मत जाओ।
 फटी हो प्रेम में पागल
 न पथ में ही मचल जाओ ॥

कठिन है मार्ग, सुगमो
 मखिले वे पार करनी हैं।
 उगडों ही सरदों पद पडें—
 सापद फिलल जाओ ॥

तुम्हें कुल पोट था जप
 फटी लावार लौटो मैं।
 हटोले पार से मल-मल
 ही फटियां निरुद जाओ ॥

प्रियतम से

बहुत दिनों तक हुई परीक्षा
अब रूखा व्यवहार न हो ।
अजी बोल तो लिया करो तुम
चाहे मुझपर प्यार न हो ॥

जिसकी हो कर रही सदा मैं
जिसकी अब भी कहलाती ।
क्यों न देख इन व्यवहारों को
टूक-टूक फिर हो छाती ?

मानिनि राधे !

मानिनि राधे !

धीं मेरा आदर्श धालपन से
तुम मानिनि राधे !
तुम-सी घन जाने को गँने
व्रत नियमादिक न्नाधे ॥

अपने को माना करती थी
मैं कृपमानु-किशोरी ।
भाव-भागन के कृष्णचन्द्र की
धीं मैं पदुर-अकोरी ॥

धा छोटा-सा गौर हनारा
छोटी छोटी मलिन्यो ।
गोशुल उमे मगगली थी मैं
गोपी सँग ही मलिन्यो ॥

मुकुल

कुटियों में रहती थी, पर
मैं उन्हें मानती कुञ्जों ।
माधव का सन्देश समझती
सुन मधुकर की गुञ्जों ॥

वचपन गया, नया रँग आया
और मिला वह प्यारा ।
मैं राधा बन गयी, न था वह
कृष्णचन्द्र से न्यारा ॥

किन्तु कृष्ण यह कभी किसी पर
जरा प्रेम दिखलाता ।
नख-शिख से मैं जल उठती हूँ
खान-पान नहीं भाता ॥

खूनी भाव उठें उसके प्रति
जो हो प्रिय का प्यारा ।
उसके लिए हृदय यह मेरा
बन जाता हत्यारा ॥

मानिनि राधे !

गुंके घला दो मानिनि राधे !
प्रीति-रीति यह न्यारी ।
पर्यो कर थी उन मनमोहन पर
अविचल भक्ति तुम्हारी ?

तुम्हें छोड़कर वन बैठे जो
मथुरा नगर-नियासी ।
कर कितने ही व्याहृष्ट जो
सुख-भीभाग्य-विलासी ॥

मुनगी उनके सुख-भाग्य को ही
उनको ही मानी थी ।
उन्हें याद कर नयन-भूरी
उन पर पति जायी थी ॥

नयनों के मूख फूल पड़ती
मानस थी मूरत पर ।
रही कर्मों-सी जीवन भर
उस पर दयान-भूरत पर ॥

श्यामा कहला कर, हो बैठी
विना दाम की चेरी ।
मृदुल उमङ्गों की तानें थीं—
तू मेरा, मैं तेरी ॥

जीवन का न्यौछावर हा हा !
तुच्छ उन्होंने लेखा ।
गये, सदा के लिए गये
फिर कभी न मुड़कर देखा ॥

अटल प्रेम फिर भी कैसे है
कह दो राधारानी !
कह दो मुझे, जली जाती हूँ,
छोड़ो शीतल पानी ॥

ले आदर्श तुम्हारा, रह-रह
मन को समझाती हूँ ।
किन्तु बदलते भाव न मेरे
शान्ति नहीं पाती हूँ ॥

आहत की अभिलाषा

जीवन को न्यौछावर करके तुम्हें सुखों को लेना ।
अर्पण कर सबकुछ परियों पर तुममें ही सब देना ॥
धे तुम मेरे इष्ट देवता, अधिक प्राण से प्यारे ।
तन से, मन से, इस जीवन से कभी न धे तुम न्यारें ॥

खपना तुमको समझ, समझती थी, हूँ सारी तुम्हारी ।
तुम मुझको प्यारे हो, मैं हूँ तुम्हें प्राण-नी प्यारी ॥
दुनिया की परवाह नहीं थी तुम में ही थी भूली ।
पाकर तुम-मा मुझ गर्व से किरती थी मैं फूली ॥

तुमको मुझी देखना ही था जीवन का न्यून मेरा ।
तुमको दुखी देखकर पानी थी मैं बघ फेरता ॥
मेरे से निरुधर सुचारु तुम और न पूजा कोई ।
माते-माते बड़े पार ही प्रेम-निचला हूँ रोयी ॥

मुकुल

मेरे हृदय-पटल पर अङ्कित है प्रिय ! नाम तुम्हारा ।
हृदय देश पर पूर्णरूप से है साम्राज्य तुम्हारा ॥
है विराजती मन-मन्दिर में सुन्दर मूर्ति तुम्हारी ।
प्रियतम की उस सौम्य-मूर्ति की हूँ मैं भक्त पुजारी ॥

किन्तु हाय ! जब अवसर पाकर मैंने तुमको पाया ।
उस निःस्वार्थ प्रेम की पूजा को तुमने ठुकराया ॥
मैं फूली फिरती थी वनकर प्रिय-चरणों की चेरी ।
किन्तु तुम्हारे निठुर हृदय में नहीं चाह थी मेरी ॥

मेरे मन में घर कर तुमने निज अधिकार बढ़ाया ।
किन्तु तुम्हारे मन में मैंने तिलभर ठौर न पाया ॥
अब जीवन का ध्येय यही है तुमको सुखी बनाना ।
लगी हुई सेवा में प्यारे ! चरणों पर बलि जाना ॥

मुझे भुला दो या ठुकरा दो, कर लो जो कुछ भावे ।
लेकिन यह आशा का अङ्कुर नहीं सूखने पावे ॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छींटे ।
अवसर पाकर वृक्ष बने यह, दे फल शायद मीठे ॥

जल-समाधि

जबकि प्रकाश हूँगी मैं तेरी

मेरी चित्र बना दे नू ।

दुखित हृदय के भाव बनाने

जग पर सब दिखावा दे नू ॥

मुकुल

मेरे हृदय-पटल पर अङ्कित है प्रिय ! नाम तुम्हारा ।
हृदय देश पर पूर्णरूप से है साम्राज्य तुम्हारा ॥
है विराजती मन-मन्दिर में सुन्दर मूर्ति तुम्हारी ।
प्रियतम की उस सौम्य-मूर्ति की हूँ मैं भक्त पुजारी ॥

किन्तु हाय ! जब अवसर पाकर मैंने तुमको पाया ।
उस निःस्वार्थ प्रेम की पूजा को तुमने ठुकराया ॥
मैं फूली फिरती थी वनकर प्रिय-चरणों की चेरी ।
किन्तु तुम्हारे निष्ठुर हृदय में नहीं चाह थी मेरी ॥

मेरे मन में घर कर तुमने निज अधिकार बढ़ाया ।
किन्तु तुम्हारे मन में मैंने तिलभर ठौर न पाया ॥
अब जीवन का ध्येय यही है तुमको सुखी बनाना ।
लगी हुई सेवा में प्यारे ! चरणों पर बलि जाना ॥

मुझे भुला दो या ठुकरा दो, कर लो जो कुछ भावे ।
लेकिन यह आशा का अद्भुत नहीं सूझने पावे ॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छींटे ।
अवसर पाकर वृक्ष बने यह, दे फल शायद मोठे ॥

उसी भँवर के निकट, किनारे
 युवक खेलते हों दो-चार ।
 हँसते और हँसाते हों वे
 निज चञ्चलता के अनुसार ॥

किन्तु हाथ ! धारा में पड़कर
 तीन युवक घट जाते हों ।
 धके हुए फिर किसी शिला से
 टकराकर रुक जाते हों ॥
 उनके मुह पर घब उठने का
 ह्रास, मन्तोष शिवा देना ।
 किन्तु साथ ही पपगोट में
 उलझना मालवा देना ॥

गहरी धारा में नीचे जब
 पड़ कर्य का शिवाणा ।
 संभो उठे पहा ना देना
 देना, मग्नता पर रुक जाना ॥

प्रभु की निर्दयता, जीवों की
कातरता दरसा दे तू ।

मृत्यु समय के गौरव को भी

भली-भाँति झलका दे तू ॥

भाव न बतलाये जाते हैं

शब्द न ऐसे पाती हूँ ।

इसीलिए हे कुशल चितेरे !

तुझको विनय सुनाती हूँ ॥

देख, सम्हल कर, खूब सम्हल कर

ऐसा चित्र बनाना तू ।

सुन्दर इठलाती सरिता पर

मन्दिर-घाट दिखाना तू ॥

वहीं पास के पुल से बढ़कर

धारा तेज बहाना तू ।

चट्टानों से टकरा कर फिर

भारी भँवर घुमाना तू ॥

उसी भँवर के निकट, किनारे
 चुपक खेलते हों दो-चार ।
 हँसते और हँसाते हों वे
 निज चञ्चलता के अनुसार ॥

किन्तु हाथ ! धारा में पड़कर
 तीन युवक बह जाते हों ।
 धके हुए फिर किसी शिला से
 टफराकर रुक जाते हों ॥
 उनके मुह पर बस जाने का
 फुट्ट मन्तोष दिया देना ।
 किन्तु नाथ हों पवनाहट में
 उलकण्ठा मल्लिका देना ॥

गहरी धारा में नीचे जब
 पथ हदय वह दिखजाना ।
 रो-रो उभे पहा मत देना
 देव, मन्दार कर रुक जाना ॥

मुकुल

धारा में सुन्दर बलिष्ठ-तन
युवक एक दिखलाता हो ।
क्रूर शिलाओं में पड़कर जो
तड़प-तड़प रह जाता हो ॥

तौ भी मन्द हँसी की रेखा
उसके मुँह पर दिखलाना ।
नहीं मौत से डरता था वह,
हँस सकता था, बतलाना ॥
किन्तु साथ ही धीरे-धीरे
वेसुध होता जाता हो ।
क्षण-क्षण में सर्वस्व दीन का
मानो लुटता जाता हो ॥

ऊपर आसमान में धुँधला
कुछ प्रकाश दिखला देना ।
एक ओर श्यामा तरुणी का
सुन्दर रूप बना देना ॥

जल-समाधि

बिखरे बाल, बिरस बचना कुछ
व्याकुल-सी दिखलाती हो ।
गोदी में दुधगुर्हीं बालिका—
लिप वहाँ पर आती हो ॥

आशाभरी दृष्टि ने प्रभु की—
ओर देखती जाती हो ।
दुनिया का सर्वस्व न लुटने—
पाये, यही मनाती हो ॥
इसके बाद चित्तरे जो न
पाये, यही घना देना ।
अपनी ही इच्छा से अन्तिम
हृदय वहाँ दिखला देना ॥

पादों में प्रभु के पैरों पर
करुण भाव दिखाना न ।
अथवा मन्द हँसी की देखा,
या निर्दोष घनाना न ॥

मेरा नया वचपन

बार बार आती है मुझको
मधुर याद वचपन तेरी ।
गया, ले गया तू जीवन की
सबसे मस्त खुशी मेरी ॥

चिन्ता - रहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द ।
कैसे भूला जा सकता है
वचपन का अतुलित आनन्द ?

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था
दुःख-दुःख किसे जाने ?
वनी हुई थी, अहा ! कोपड़ी—
और चीथड़ों में रानी ॥

मेरा नया बचपन

फिये दूध के फुल्ले मैंने
चूस खेंगूँ नुभा पिया ।
किलकारी फाँदल नचाकर
सूना पर आयाइ किया ॥

रोना और नचल जाना भी
क्या आनन्द दिखाने थे !
बड़े बड़े मोती-मे खींचू
जगमाला पहनाने थे ॥

मैं रोती, माँ फान पोंड़कर
पानी, मुगहो उठा लिया ।
भाइ - पोंड़कर चूस - चूस
गोले गालों को नुभा दिया ॥

बादा मे चन्दा दिखाना
मेक-लीक दूध हमर रहे ।
धुनी हई सुमरान देवतन
मदरें पैरें चन्दा रहे ॥

मुकुल

वह सुख का साम्राज्य छोड़कर
मैं मतवाली बड़ी हुई ।
लुट्टी हुई, कुछ ठगी हुई-सी
दौड़ द्वार पर खड़ी हुई ॥

लाजभरी आँखें थीं मेरी
मन में उमँग रँगिली थी ।
तान रसीली थी कानों में
चञ्चल छैल छवीली थी ॥

दिल में एक चुभन-सी थी
यह दुनिया सब अलवेली थी ।
मन में एक पहेली थी
मैं सबके बीच अकेली थी ॥

मिला, खोजती थी जिसको
हैं वचपन ! ठगा दिया तू ने ।
थरे ! जवानी के फन्दे में
सुम्नको फँसा दिया तू ने ॥

मेरा नया वचन

सब गलियों उसकी भी देख
उसकी सुशियों न्यारी हैं ।
प्यारी, प्रीतम की रँग-रलियों
की स्मृतियों भी प्यारी हैं ॥

माना मैंने युवा-काल का
जीवन खूब निराला है ।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का
उदय मोहने वाला है ॥

फिन्तु यहाँ मरुभूमि है भारी
सुख-क्षेत्र संसार बना ।
बिन्ता के चपट में पकड़कर
जीवन भी है भार बना ॥

आजा, परचन ! एकपार विर
दे दे परचनो निर्मल शान्ति ।
मरुभूमि मरुभूमि भिन्नाने परचन
परचनो परचन विरानि ॥

मुकुल

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप ।
क्या फिर आकर मिटा सकेगा
तू मेरे मन का सन्ताप ?

मैं वचन को बुला रही थी
बोल उठी विटिया मेरी ।
नन्दन वन-सी फूल उठी
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ॥

‘माँ ओ’ कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आयी थी ।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने आयी थी ॥

पुलक रहे थे अद्भुत, दृगों में
कौतूहल था छलक रहा ।
मुँह पर थी आहाद-लालिमा
विजय-गर्व था झलक रहा ॥

मेरा नया बचपन

मैंने पूछा "यह क्या लायी ?"
पोल उठी यह "मों, फाओ ।"
तुम्हा प्रफुलित हृदय जूझी से
मैंने कहा—"तुम्ही खाओ ॥"

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन घेटी घन आया ।
उसकी मञ्जुल मूर्ति देखकर
मुक्त में नवजीवन आया ॥

मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ, चुनलाती हूँ ।
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी पन्नी घन डाती हूँ ॥

जिसे खोजती थी परन्ती मे
एक जाकर उसकी पाया ।
भाग गया था मुझे खोजकर
यह बचपन फिर से आया ॥

वालिका का परिचय

यह मेरी गोदी की शोभा
सुख-सुहाग की है लाली ।
शाही शान भिखारिन की है
मनो - कामना - मतवाली ॥

दीप-शिखा है अन्धकार की
घनी घटा की उजियाली ।
ऊपा है यह कमल-भृङ्ग की
है पतझड़ की हरियाली ॥

सुधाधार यह नीरस दिल की
मस्ती मगन तपस्वी की ।
जीवित ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की ॥

चीते हुए बालपन की यह
झोड़ा - पूर्ण वाटिका है ।
बढ़ी मचलना, बढ़ी किलकना
हँसती हुई नाटिका है ॥

बालिका का परिचय

मेरा मन्दिर, मेरी मस्जिद
फाया-काशी यह मेरी ।
पूजा-पाठ, ध्यान-जप-तप है
घट-बट-चासी यह मेरी ॥

कृष्णचन्द्र की मीठाश्रीं को
अपने आँगन में देखो ।
कौशल्या के मातृमोद को
अपने ही मन में लेशो ॥

प्रभु ईसा की सनाशीलता
नयी मुहम्मद का विश्वास ।
जीव दया विनयर गौतम की
आस्था देखो इसके पास ॥

परिचय यह रहे तो मुग्धने,
ऐसे परिचय है इसका ।
वही जान सज्जा है इसको,
माता का दिन है जिसका ॥

इसका रोना

(१)

तुम कहते हो मुझको इसका—
रोना नहीं सुहाता है ।
मैं कहती हूँ, इस रोने से
अनुपम सुख छा जाता है ॥

सच कहती हूँ इस रोने की
छवि को ज़रा निहारोगे ।
बड़ी-बड़ी आँसू की बूँदों—
पर मुक्तावलि वारोगे ॥

इसका रोना

(२)

ये नन्हें-से आँठ और
यह लम्बी-सी सिसकी देखो ।
यह छोटा-सा गला और
यह गहरी-सी हियकी देखो ॥

कैसी करुणा-जनक दृष्टि है !
हृदय उमड़कर आया है ।
द्विपे हुए आत्मीय भाव को
यह उभाड़कर लाया है ॥

(३)

हैनी पाहरी पहल-पहल को—
हो पटुधा दरनागी है ।
पर रोने में अन्तरतम तरु
की हलपल मच जागी है ॥

जिगसे मायी हुई आत्मा—
जगती है, अक्षुलायी है ।
दृष्टे हुए शिन्धी मायी को
अरुने पास हुतायी है ॥

सुकुल

(४)

मैं सुनती हूँ कोई मेरा
मुझको अहा ! बुलाता है ।
जिसकी करुणापूर्ण चीख से
मेरा केवल नाता है ॥

मेरे ऊपर वह निर्भर है
खाने, पीने, सोने में ।
जीवन की प्रत्येक क्रिया में
हँसने में ज्यों रोने में ॥

(५)

मैं हूँ उसकी प्रकृत सज्जिनी
उसकी जन्म-प्रदाता हूँ ।
वह मेरी प्यारी विटिया है
मैं ही उसकी माता हूँ ॥

तुमको सुनकर चिढ़ आती है
मुझको होता है अभिमान ।
जैसे भक्तों की पुकार सुन
गर्वित होते हैं भगवान ॥

भाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आबादी की कीमत सवने पहचानी थी,
दूर फिरङ्गी को करने की सवने मनमें ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में

यह सलवार पुरानी थी ।

बुन्देले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी फहानी थी ।

रघु लड़ी मर्दाना यह तो

मर्दाना वाली रानी थी ॥

फानपूर के नाना की मुँहपोली पहिनि 'छोली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की यह मन्तान अफेली थी,
नाना के भोग पहनी थी यह, नाना के भोग खेली थी,
भरारी, दात, श्याम, फटारी हमरी यही नहेली थी,

मुकुल

निःसन्तान मरे राजा जी
रानी शोक-समानी थी ।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
.खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

बुम्हा दीप भाँसी का तब डलहौजी मनमें हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजे भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य भाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
भाँसी हुई विरानी थी ।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
.खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

भौंसी की रानी

अनुभव विनय नहीं मुनता है, विकट शामकों की माया,
लुपारी घन दया चाहता था जब यह भारत आया,
उलझी ने पैर पसारें अब तो पलट गयी काया,
राजाओं, नव्यायों को भी उमने पैरों टुकराया,

रानी दासी यनी, यनी यह

दासी अब महारानी थी ।

पन्देते हरमोतीं के मुँह

एतने मुनी पहानी थी ।

जुए लड़ी मर्यानी यह तो

भौंसी वाली रानी थी ॥

दिनी राजधानी देहली की समस्त रानी पाली-बाग,
शैव पैनाया था शिदर में, एता नामपुर या भी पाठ,
बदौल, मखौर, मखान, बननायक को शीन दिग्गज,
जय कि निग्य, सजाव मकानर शमी हुज्जा था पना-मिजान,

मुकुल

बङ्गाले, मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी ।
बुन्देले हरवोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
.खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

रानी रोयीं रनिवासों में, बेगम ग़म से थीं बेजार,
उनके गहने-कपड़े विकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के ज़ेवर ले लो' 'लखनउ के लो नौलख हार',

यों परदे की इज्जत परदेशी
के हाथ विकानी थी ।
बुन्देले हरवोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
.खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

भार्गीनी की रानी

कुट्टियों में थी विषम घेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर नैतिकों के मन में था अपने पुरुषों का अभिमान,
नाना धुन्धूपन्न पैदावा जुटा रहा था नय नागान,
घड़िन इधोली ने रण-नरटों का कर दिया प्रकट आतान,

दुष्का यज्ञ प्रारम्भ उन्हे सी

नाथी शोनि जगानी थी ।

कुन्देले हरयोकी के मुँह

हरने मृती कलानी थी ।

सुदलदो मदीनी पर गो

भार्गीनी वाली रानी थी ॥

महलों में ही आग, मोहड़ी ने जगाना मृतामयी थी,
यह स्वयम्भवा की शिरगायी अन्धकार में लगी थी,
भौंती पैरी, दिल्ली पैरी, लखनऊ लगी लगी थी,
मेरठ, जामदू, फरमा में भारी भूम सपानी थी,

मुकुल

जवलपूर, कोल्हापुर में भी

कुछ हलचल उकसानी थी ।

बुन्देले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी ।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

भाँसी वाली रानी थी ॥

इस स्वतन्त्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धूपन्त, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती

उनकी जो कुरवानी थी ।

बुन्देले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी ।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

भाँसी वाली रानी थी ॥

भारती की रानी

इनकी गाथा छोड़, चले हम कौनों के मैदानों में,
जहाँ पदी है लक्ष्मीबाई नई पनी नईनों में,
लेखितनेष्ट चौकर था पहुँचा, आगे पदा जवानों में,
रानी ने तलवार धींच ली, दृष्टा हृदय असमानों में,

खुली होकर चौकर भागा,

उसे अजब ईरानी थी ।

दुन्देले तरबोनों के मुँह

हमने सुनी कतानी थी ।

सूर लड़ी नईनों यह गो

भौंसी पाली रानी थी ॥

रानी लड़ी, शाहसी लारों, कर सौ-सौत निरन्तर पार,
घोड़ा मरुवर गिरा भूमि पर, गया नरम-नरम गिरा,
पशुना नद पर आँसुओं के फिर लारों रानी के पार,
दिलकी रानी आगे पदा थी, दिना मरुतिपर पर कदिकार.

मुकुल

अंग्रेजों के मित्र सेंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी ।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खायी थी,
राना और मन्दरा सखियाँ रानी के सँग आयी थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी,

पर, पीछे हारूज आ गया,
हाय ! घिरी अब रानी थी ।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
भाँसी वाली रानी थी ॥

भार्या की रानी

तो भी रानी मार-काटकर चलती थी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था चहूँ सङ्कट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में था गये सवार,
रानी एक, शयु घटनेरे, होने लगे पार-पर-पार,

पायल होकर गिरी मिदिनी

उसे घोर-गति पानी थी ।

सुन्दरे हरबोलों के सुँह

हमने सुनी शहानी थी ।

सूय लड़ी मर्दाना वह तो

भार्या वाली रानी थी ॥

रानी गयी मिथार, बिना अब उमरी दिख सकागी थी,
मिला मेल से मेल, मेल ही वह, मर्यादा अपरिहार्य थी,
धरती पर कुल सेहस्र की थी, मनुज गरी अपवर्ग्य थी,
हमारे साँचि कर्मों का ही वह मर्यादागम नारी थी,

मुकुल

मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी ।
वह होता, खुशी तो क्या होती न दूनी ?
हम सङ्गल मनावें, वह तपता है धूनी ।
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी ॥

है आती मुझे याद चित्तौर गढ़ की,
धधकती है दिल में वह जौहर की ज्वाला ।
हैं माता-बहिन रो के उसको बुभातीं
कहो भाई, तुमको भी है कुछ कसाला ? ॥

है, तो बड़े हाथ, राखी पड़ी है ।
रेशम-सी कोमल नहीं यह कड़ी है ॥
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है ।
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है ॥

आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ—
कि माता के बन्धन की है लाज तुमको ?
—तो बन्दी बनो, देखो बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको ॥

विजयी मयूर

विजयी मयूर

गू मरजा, मरज मयङ्कर थी,
शुभ नदी सुगार्द देवा था ।
धनपोर पटाएँ वरणी थी,
पथ नदी दिगार्द देवा था ॥

लाना सँग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
 हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले ॥
 किन्तु न तुम उपहार - भाव आकर दरसाना ।
 स्मृति में पूजा - हेत यहाँ थोड़े विखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
 कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ॥
 आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
 अपने प्रिय परिवार - देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इस लिए चढ़ाना ।
 करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना ॥
 तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
 शुष्क-पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किन्तु

बहुत धीरे - से आना ।

यह है शोक - स्थान

यहाँ मत शोर मचाना ॥

मेरी कविता

सुभे फदा कविता लिखने फेा,
 लिखने पैठे में तरफाल ।
 पहले लिखा—“जालियो वाला”,
 फदा कि “घस, हो गये निदान ॥”

तुम्हें और कुछ नहीं भूखाना,
 ते-देकर वह भूखी बाण ।
 रंगे से फल पया होया है,
 भुल न भयेगा उमका दाग ॥

भूख हने फल होमा भग्न हो,
 गेने फदा—“भरो कुछ धीर ।
 तुमको हनेते देव फली,
 सिर फापर हने न दापर धीर ॥”

६५

मुकुल

कहा—“न मैं कुछ लिखने दूँगा,
मुझे चाहिए प्रेम - कथा।”
मैंने कहा—“नवेली है वह,
रम्य - वदन है चन्द्र यथा ॥

अहा ! मग्न हो उछल पड़े वे,
मैंने कहा—“सुनो चुपचाप।”
वड़ी - बड़ी - सी भोली आँखें,
केशपाश ज्यों काले साँप ॥

भोली - भाली आँखें देखो,
उसे नहीं तुम रुलवाना ।
उसके मुँह से प्रेम भरी,
कुछ मीठी बातें कहलाना ॥

हाँ, वह रोती नहीं कभी भी,
और नहीं कुछ कहती है ।
शून्य दृष्टि से देखा करती,
खिन्नमना - सी रहती है ॥

मेरी कविता

फरके याद पुराने सुगंध फे,
कभी चौक - सी पड़ती है।
भयने कभी काँप जाती है,
कभी क्रोध में भरती है ॥

कभी किमी की ओर देखती
नहीं दिखाई देती है।
हैसती नहीं किन्तु चुपके से,
कभी - कभी रो लेती है ॥

साजे। हल्दी के रंग से,
सुद पीली उनकी नारी है।
लाल - लाल में धरते हैं सुन्द,
अथवा लाल चिनारी है ॥

दिलवा लोर लाल ! समझ है,
हो पर जूती रंग में लाल।
है किन्तु - किन्तु में सफ़ाई,
दिलवा पर भी सुन्द-सुन्द भाव ॥

मुकुल

अवला है, उसके पैरों में
बनी महावर की लाली ।
हाथों में मेहदी की लाली,
वह दुखिया भोली - भाली ॥

उसी वागु की ओर शाम को,
जाती हुई दिखाती है ।
प्रातःकाल सूर्योदय से,
पहले ही फिर आती है ॥

लोग उसे पागल कहते हैं,
देखो तुम न भूल जाना ।
तुम भी उसे न पागल कहना,
मुझे क्लेश मत पहुँचाना ॥

उसे लौटती समय देखना,
रम्य वदन पीला - पीला ।
सारी का वह लाल छोर भी
रहता है विलकुल गीला ॥

मेरी कविता

टांगन भी फाहते हैं उसको
फोड़े फोड़े हन्गारे ।
उमे देसना, किन्तु न पेनी
गल्लो तुम करना प्यारे ॥

दायीं प्रीत हृदय में भङ्गन
हुत उनके दिग्गतांती है ।
एह भी प्रतिदिन प्रम-प्रम मे
हुत भोनी होनी जाती है ॥

किन्ना रोड, सम्भव है, उनको
भङ्गन पित्रकृत मित्र जावे ।
उसकी भोली-भाली ज्योति
दाव ! मरु या सुंद जावे ॥

उसकी मेरी कला देसना
जोने खान मरु देना ।
उसके मुह में सुभियता बनकर
मुन भी मुह मरु देना ॥

मुकुल

राखी

भैया कृष्ण ! भेजती हूँ मैं
राखी अपनी, यह लो आज ।
कई वार जिसको भेजा है
सजा-सजाकर नूतन साज ॥

लो आओ, भुजदण्ड उठाओ
इस राखी में बँध जाओ ।

भरत - भूमि की रजभूमी को
एक वार फिर दिखलाओ ॥

वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान ।
पढ़ते - पढ़ते आँखों में
छा जाता राखी का आख्यान ॥

मैंने पढ़ा, शत्रुओं को भी
जब-जब राखी भिजवायी ।

रत्ना करने दौड़ पड़ा वह
राखी - वन्द - शत्रु - भाई ॥

किन्तु देखना है, यह मेरी
 राखी क्या दिखलाती है ।
 क्या निलोज फलाई पर ही
 पेंथपर यह रह जानी है ॥

देखो मैया, भेज रही है
 तुमको—तुमको राखी आज ।
 मायी राजस्थान पनापर
 रख लेना राखी ही आज ॥

हाथ फौफना, हृदय भड़कना
 है मेरी भारी श्वावाज ।
 श्वा भी शीर-शीक बटवा है
 जलियाँ का यह गोलनराज ॥

राखी

भैया कृष्ण ! भेजती हूँ मैं
राखी अपनी, यह लो आज ।
कई वार जिसको भेजा है
सजा-सजाकर नूतन साज ॥

लो आओ, भुजदण्ड उठाओ
इस राखी में बँध जाओ ।

भरत - भूमि को रजभूमी को
एक वार फिर दिखलाओ ॥

वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान ।
पढ़ते - पढ़ते आँखों में
छा जाता राखी का आख्यान ॥

मैंने पढ़ा, शत्रुओं को भी
जत्र-जत्र राखी भिजवायी ।

रत्ना करने दौड़ पड़ा वह
राखी - वन्द - शत्रु - भाई ॥

राखी

किन्तु देखना है, यह मेरी
राखी क्या दिखलाती है ।
क्या निस्तेज कलाई पर हो
धँधकर यह रह जावो है ॥

देखो भैया, भेज रही हूँ
तुमको—तुमको राखी आज ।
भार्यो राजस्थान पनाकर
रहर लेना राखी की लाज ॥

हाथ फोपता, हृदय धड़कता
है मेरी भारी जवाब ।
हृदय भी धौंक-धौंक उठता है
जलियों का पद मोलनराज ॥

मुकुल

वहिनें कई सिसकती हैं हा !

सिसक न उनकी मिट पायी ।

लाज गँवायी, गाली पाई

तिस पर गोली भी खायी ॥

डर है कहीं न मार्शल-ला का

फिर से पड़ जावे घेरा ।

ऐसे समय द्रौपदी-जैसा

कृष्ण ! सहारा है तेरा ॥

बोलो, सोच-समझकर बोलो,

क्या राखी बँधवाओगे ?

भीर पड़ेगी, क्या तुम रक्षा—

करने दौड़े आओगे ?

यदि हों तो यह लो मेरी

इस राखी को स्वीकार करो ।

आकर भैया, वहिन 'सुभद्रा'—

के कष्टों का भार हरो ॥

विजयादशमी

विजये ! तूने तो देखा है,
 यह विजयी श्रीराम नगरी !
 धर्म-भीरु माविक निश्चल मन
 यह करुणा का धाम नगरी !!

पनवामी अमलाय खीर फिर
 हुआ विभाता धाम नगरी !
 हरी गयी माधुरी जानकी
 यह व्याकुल पनश्चान नगरी !!

कैसे जीत सका रावण को
 यह तो था सम्राट नगरी !
 रसक रासन सैन्य नयन था
 प्रहरी निन्धु विगत नगरी !!

राज-मरदान एसाग भी हो
 नहीं रहा मय राज नगरी !
 राजदुर्गको से एक पर है
 नदी पुरीकी माल नगरी !!

मुकुल

हो असहाय भटकते फिरते
वनवासी-से आज सखी !
सीता-लक्ष्मी हरी किसी ने
गयी हमारी लाज सखी !!

रागचन्द्र की विजय - कथा का
भेद बता आदर्श सखी !
पराधीनता से छूटे यह
प्यारा भारतवर्ष सखी !!

सबल पुरुष यदि भीरु बनें तो
हमको दे वरदान सखी !
अबलाएँ उठ पड़े, देश में—
करें युद्ध घमसान सखी !!

पापों के गढ़ टूट पड़े और
रहना तुम तैयार सखी !
विजये ! हम-तुम मिल कर लेंगी
अपनी माँ का प्यार सखी !!

मातृ-मन्दिर में

घोंगा पज-नी उठी, मुद गये नेद
पौर मुद जाया भयान ।
मुदने पी थी देर, दिन पदा
उत्सव का प्यारा सामान ॥

जिम्हो मुदना-मुदना बरने
मुद जिना था पानी पान ।
दिन प्यारी भास में हसने
पान हुना है मो का प्यार ॥

मुकुल

उस हिन्दू जन की गरीबिनी
हिन्दी प्यारी हिन्दी का ।
प्यारे भारतवर्ष - कृष्ण की
उस प्यारी कालिन्दी का ॥

है उसका ही समारोह यह
उसका ही उत्सव प्यारा ।
मैं आश्चर्य - भरी आँखों से
देख रही हूँ यह सारा ॥

जिस प्रकार कङ्काल - बालिका
अपनी माँ धनहीना को ।
टुकड़ों की मुहताज आज तक
दुग्धिनी को उस दीना को ॥

मुन्दर वन्याभूषण - सज्जित
देख चकित हो जाता है ।
सच है या केवल सपना है
कहनी है, रुक जाती है ॥

मातृ-मन्दिर में

पर सुन्दर लगती है, इन्दा—
यह होती है कर ले प्यार।
प्यारे चरणों पर घलि जाये
कर ले मन भर के मनुष्यार ॥

इन्दा प्रचल हुई, माता के
पास दौड़कर जाती है।
बसों को भँपारनी उमरी
आभूषण पहनाती है ॥

उसी भौंति आश्चर्य मंदमय
आल मुझे भित्तिकावा है।
मन में उमड़ा हुआ भाव पल
मुँह तक आ कर जाता है ॥

प्रेमोन्मत्ता होकर मेरे पास
दौड़ आती है मेरी।
मुझे मजाने या भँपारने
मे ही स्मरण पती है मेरी ॥

मुकुल

तेरी इस महानता में
क्या होगा मूल्य सजाने का ?
तेरी भव्य मूर्ति को नकली
आभूषण पहनाने का ?

किन्तु क्या हुआ माता ! मैं भी
तो हूँ तेरी ही सन्तान ।
इसमें ही सन्तोष मुझे है
इसमें ही आनन्द महान ॥

मुझ-सी एक-एक की बन तू
तीस कोटि की आज हुई ।
हुई महान, सभी भाषाओं—
की तू ही सरताज हुई ॥

मेरे लिए बड़े गौरव की
और गर्व की है यह बात ।
तेरे ही द्वारा होवेगा
भारत में स्वातन्त्र्य - प्रभात ॥

मातृ-मन्दिर में

असहयोग पर मर - मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा ।
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
वैभव, धन तेरा होगा ॥

जगती के योंसे द्वारा
शुभ पदमन्दन तेरा होगा ।
देवी के पुणों द्वारा
अथ अभिनन्दन तेरा होगा ॥

तू होंगी स्वागत, देश की
पालमेरुट धन जाने में ।
तू होंगी सुख-नगर, देश के
वजड़े क्षेत्र समाने में ॥

तू होंगी स्वगतार, देश के
विजड़े हृदय मिगाने में ।
तू होंगी अविचार, देशभर—
की स्वगतार शिगाने में ॥

मुकुल

तेरी इस महानता में
क्या होगा मूल्य सजाने का ?
तेरी भव्य मूर्ति को नकली
आभूषण पहनाने का ?

किन्तु क्या हुआ माता ! मैं भी
तो हूँ तेरी ही सन्तान ।
इसमें ही सन्तोष मुझे है
इसमें ही आनन्द महान ॥

मुम-सी एक-एक की वन तू
तीस कोटि की आज हुई ।
हुई महान, सभी भाषाओं—
की तू ही सरताज हुई ॥

मेरे लिए बड़े गौरव की
और गर्व की है यह बात ।
तेरे ही द्वारा होवेगा
भारत में स्वातन्त्र्य - प्रभात ॥

मातृ-मन्दिर में

असहयोग पर मर - मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा ।
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
पैगम, धन तेरा होगा ॥

जगती के वीरों द्वारा
शुभ पदचन्दन तेरा होगा ।
देवों के पुष्पों द्वारा
अथ अभिनन्दन तेरा होगा ॥

तू होंगी आधार, देश की
पार्लमेण्ट बन जाने में ।
तू होंगी सुख-सार, देश के
उजड़े क्षेत्र बसाने में ॥

तू होंगी व्यवहार, देश के
विछुड़े हृदय मिलाने में ।
तू होंगी अधिकार, देशभर—
को स्वातन्त्र्य दिलाने में ॥

मुकुल

उसे भी आती होगी याद ?
उसे ? हाँ, आती होगी याद ।
नहीं रूढ़ूँगी मैं, लो, आज
सुनाऊँगी उसको फरयाद ॥

कलेजा माँ का, मैं सन्तान,
करेगी दोषों पर अभिमान ।
मातृ - वेदी पर घण्टा बजा,
चढ़ा दो मुक्तको हे भगवान् !!
सुनूँगी माता की आवाज,
रूढ़ूँगी मरने को तैयार ।
कभी भी उस वेदी पर देव !
न होने दूँगी अत्याचार ॥

न होने दूँगी अत्याचार
चलो, मैं हो जाऊँ वन्दितान ।
मातृ - मन्दिर में हृष्ट पुकार
चढ़ा दो मुक्तको हे भगवान् !!

मातृ-मन्दिर में

देव ! ये कुब्जे बजड़ी पत्तों,
सौंर पाह्योकिन्ना बड़ ही गर्बी ।
हटारें हमने लागे पाह
किन्नु वे पत्तियो कुड़ ही गर्बी ॥

किन्नु ने दिवा दात दे दिवा
सुहावा गर्बी, सौंरिग निगा ।
मातृ-मन्दिर में नूने बड़े
सुहावे दे बजड़े सरसरा निगा ॥

मुकुल

आह की कठिन लूह चल रही
नाश का घन-गर्जन हो रहा ।
बूँद या वाण बरसने लगे
पापियों से तर्जन हो रहा ॥

अमर-लोचन के धन को लिए
चलो, चल पड़ें, खुले हैं द्वार ।
गजी का शुक्लाम्बर ले चलें
मातृ-मन्दिर में हुई पुकार ॥

जननि के दुख की घड़ियाँ कटें
सजावें पूजा का साहित्य ।
आरती उतरे आदर भरी
करों में लें नभ का आदित्य ॥

आज वे सन्देशे सुन पड़ें
कटें पद-कञ्जों की जञ्जीर ।
मुक्ति की मतवाली माँ उठे
उठावे बेटी - बेटे वीर ॥

मातृ-मन्दिर में

पाप पृथ्वी पर से उठ जाय
पापियों से दूरे नग्नन्ध ।
प्यार, प्रतिभा, प्राणों की उठे
त्यागमय शीतल-मन्द-सुगन्ध ॥

विजयिनी माँ के पीर सुपुत्र
पाप से अमद्योग लें टान ।
सुंजा डालें स्वराज्य की गान
और नष्ट हों जायें अज्ञान ॥

इस से लेखनियों उठ पढ़ें
मातृ-भू को गौरव से गढ़ें ।
फरोदों प्रान्तिपारिणी मूर्ति
पलों से निर्भयता से गढ़ें ॥

हमारी प्रतिभा साक्षी रहे
देश के परमों पर ही पढ़ें ।
अज्ञान के भावों से मन्त्र
आत्म-सत् विद्या जीवना पढ़ें ॥

भण्डे की इज्जत में

धन्य हुई मैं आज, धन्य है
सखि सौभाग्य हमारा ।
जिसकी थी इच्छुका, मिला है
मुझे समय वह प्यारा ॥

माँ की वेदी पर बलि होने-
का शुभ अवसर आया ।
जन्म सफल हो गया, आज ही
मैंने सब कुछ पाया ॥

विदा माँगती हूँ मैं सब से
लो, देखो, हूँ जाती ।
कौमी भण्डे की इज्जत में
हूँ यह शीश चढ़ाती ॥

मेरी टंक

निर्धन हों धनवान, परिधन उनका धन ही ।
निर्धन हों धनवान, नान्यनय उनका मन ही ॥
हों स्वार्थीन गुलाम, ज्ञान में अधनान ही ।
हमी आनन्दर समर्थीन, मेरा जीवन ही ॥

गो. आनन्द जी पार

हमें आनन्द में ऐरा ।

आ. पार है प्रकाश.

निर्धन अधनान-जीवन ॥

विदाई

कृष्ण-मन्दिर में प्यारे वन्द्यु
पधारो निर्भयता के साथ ।
तुम्हारे मस्तक पर हो सदा
कृष्ण का वह शुभचिन्तक हाथ ॥

तुम्हारी हृदय से जग पड़े
 देश का सोया हुआ समाज ।
 तुम्हारी भव्य मूर्ति ने मिले,
 शक्ति बट विकट त्याग की आज ॥

तुम्हारी दुःख की पक्षियों पनें
 दिलाने वाली हूँ स्वराज ।
 हमारे हृदय पनें पलवान
 तुम्हारी त्यागमूर्ति ने आज ॥
 तुम्हारे देनपन्थु यदि फर्मा
 उरें, शायद ही पीड़े हूँ ।
 पन्थु ही पत्तियों का परदान
 तुम्हें मैं ये निर्भय कर मिटें ।

हजारों हृदय जिसे वे रों,
 उन्हें मन्देता ही कम पक ।
 बड़े भीमों परीच से रीति,
 न जानना तुम्हें स्वराज्य ही देख ॥

विदा

“गिरफ्तार होने वाले हैं,
आता है वारन्ट अभी ।”
धक-सा हुआ हृदय, मैं सहमी
हुए विकल साशङ्क सभी ॥

किन्तु सामने दीव्य पदें
 मुखुरा रंभे ये पड़े-पड़े ।
 रुके नहीं, आँसुओं से आँसू
 सद्गता टपके पड़े - पड़े ॥

“पगली, यों हों दूर फरंगी
 माता का यह रौख फट ?”
 रुका वेग भागों का, दीव्या
 अदा ! मुझे यह गौरव फट ॥

तिजक, लाजपत, धीमांधी जी
 गिरनार पहुँच गए हुए ।
 जेल गये, जनता में पूजा,
 नहुट में अवनार हुए ॥

जेल ! हमारे मजमातन के
 गारे पावन जन्म - मरण ।
 तुमको मर्यादा सोचें नानेक
 कृत्य - भय का हिन्दुमन ॥

मुकुल

मैं प्रफुल्ल हो उठी कि आहा !
आज गिरप्रतारी होगी ।
फिर जी धड़का, क्या भैया की
सचमुच तैयारी होगी !!

आँसू छलके, याद आ गयी,
राजपूत की वह बाला ।
जिसने विदा किया भाई को
देकर तिलक और भाला ॥

सदियों सोयी हुई वीरता
जागी, मैं भी वीर बनी ।
जाओ भैया, विदा तुम्हें
करती हूँ मैं गम्भीर बनी ॥

याद भूल जाना मेरी
उस आँसू वाली मुद्रा की ।
कीजे यह स्वीकार बधाई
छोटी बहिन 'सुभद्रा' की ॥

स्वागत

तेरे स्वागत को उत्सुक यह सदा हुआ है, मध्व-प्रदेश ।
अर्घ्यदान दे रही नर्मदा क्षीपक स्वयं बना दिवसेन ॥

दिग्भ्याचल अगवानी पर है
घन - धी धँवर हुलासी है !
भोली - भाली जनता तेरा
घटपट स्वागत गानी है ॥

आ मैया काँपेन ! हमारी आवाँज को प्यारी मूर्ति !
राजकीन राजाओं के मन पैगार को स्वामाँजिब मूर्ति !

है स्वागत की मूर्ति तदपि
मो ! मन में होता है कृष्ण मोन ।
प्यारों में प्रदग्गट - मो है,
है स्वामाँजिब की मूर्ति ॥

मुकुल

हमें नहीं भय सङ्गीनों का, चमक रहीं जो उनके हाथ ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ ॥

ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ
दमन नीति के वे कानून ।
डरा नहीं सकते हैं हमको
यदपि बहावें प्रतिदिन खून ॥

हम हिंसा का भाव त्याग कर विजयी, वीर, अशोक बने ।
काम करेंगे वही कि जिससे लोक और परलोक बने ॥

किन्तु आज स्वागत की धुन में
हमें नहीं कुछ भी परवाह ।
तुम्हको पाकर दीन - हीन भी
निज को समझ रहा नरनाह ॥

है इतना उत्साह कि डर है, हम उन्मत्त न बन जावें ।
है इतना विश्वास कि भय है, हम गर्विष्ठ न कहलावें ॥

इतना बल है प्रबल फर्दी हम, अत्याचार न कर दारें ।
 यही सोच, सद्बोध यही, मर्यादा पार न कर दारें ॥

अतः विनय है शान्ति सहित माँ !
 हमको मार्ग सुना देना ।
 भड़की हुई हृदय को प्यारा
 नौ ! कर प्यार सुना देना ॥

कृते हुए दोनों की आशा, नू दोनों की उम्मीद रख ।
 भारतीय स्वातन्त्र्य प्राप्ति की नू विरलीवी आशिक यत्न ॥

नरे हुए को खबर पनाये—
 वाली नू मजबूत बन गये ।
 प्रिय स्वराज्य-मन्थालन का है
 एक मात्र नू जीवित यत्न ॥

पुस्तकें, माँगी, शिक्षण, पूजा, तार गये, कृते उम्मीद ।
 तार, मजबूत, मिश्रण-मोहकरी तार गयेने का का पार ।

मुकुल

गरदन कटी हमारी रण में
पड़ा हमारा ही हथियार ।
पर मालिक बन गये और ही
दिया दासता का उपहार ॥

ऐसे समय सहारा तेरा है बच्चों की यही पुकार ।
कर ये दूर धाक धमकी के नौकरशाही के अधिकार ॥

वायु बहे स्वच्छन्द भारती,
भारत का फूले उद्यान ।
नव वसन्त के साथ भारती
देखे भारत का उत्थान ॥

आयी हो वरदायिनि ! आओ, आओ-आओ वारम्बार ।
त्रुटियों की कुटिया प्रस्तुत है और तुम्हारा है अधिकार ॥

इस कुटिया को महल समझना
हम हैं बालक अज्ञानी ।
पूजा को तैयार खड़े हैं,
स्वागत ! आओ महारानी !!

स्वागत-गीत

कर्म के योगी, शक्ति-प्रयोगी,
देश - भविष्य सुधास्त्रियेण ।
हौं, पीत-देवता के, दीन-देवता के,
जीवन - प्राण पथास्त्रियेण ॥

सुभाषण कर्म पदाने श्री हने दीन हृष्य ।
सुभाषी पाणे मे दिना में हृष्ये दीन हृष्य ॥
सुभाषे हृष्यणने श्री हृष्यणन का श्री हृष्येण हृष्य ।
सुभाषे मान का हृष्य पाणे हृष्येण हृष्य ॥

हाँ, पर उपकारी, राष्ट्र-विहारी,
कर्म का मर्म सिखाइयेगा ॥

तुम्हारे बच्चों को कष्टों में आज याद हुई ।
तुम्हारे आने से पूरी सभी मुराद हुई ॥
गुलामखानों में राष्ट्रीयता आवाद हुई ।
मादरे हिन्द यों बोली कि मैं आजाद हुई ॥

हाँ, दीन के भ्राता, सङ्कट त्राता,
जी की जलन बुझाइयेगा ॥

राष्ट्र ने कहा कि महायुद्ध का नियोग करो ।
कँपा दो विश्व को, अव शक्ति का प्रयोग करो ॥
हटा दो दुश्मनों को, डट के असहयोग करो ।
स्वतन्त्र माता को करके स्वराज्य भोग करो ॥

हाँ, हिंसा - हारी, शस्त्र - प्रहारी,
रार की रीति सिखाइयेगा ॥

स्वदेश के प्रति

आ, स्वयंभू प्यारे स्वदेश, आ,
स्वागत करती हूँ तेरा ।
मुझे देख कर आज ही रहा
तूना प्रमुदित मन मेरा ॥

आ, उस बालक के नमन
जो है मुकता का परिचारी ।
आ, उस सुदूर-वीर-भ्रातृजयो
विपदाओं ही हैं प्यारे ॥

आ, उस मेयक के नमान तू
विनयशील परमुक्तों - का ।
स्वयंभू आ तू सुदूर में
वीरि-भ्रमण का प्यारों - का ॥

स्वागत ही हूँ मैं परिचारी
मुक्तों का, निर-पराधी ।
मुझे स्वयंभू ही हूँ मैं
ही विनय परमुक्तों ॥

मत जाओ !

यों असहाय छोड़कर असमय
कैसे जाते हो भगवान ?
लौटो, तुम्हें न जाने देंगे,
दुखी देश के जीवन - प्राण !

भारत मैया की नैया के
चतुर खेवैया लौट चलो ।
इस कुसमय में साथ न छोड़ो,
रुक जाओ, ठहरो, सुन लो ॥

आशा - वेलि स्वदेश-भूमि की
यों न हाय ! मुरझाने दो ।
लौटो, लौटो, भारत के धन !
उसे ज़रा हरिथाने दो ॥

जननि निछावर होगी तुमपर
जनता वलि - वलि जावेगी ।
श्रद्धा और प्रीति से तुमको
नयनों में विठलावेगी ॥

लौटो, आओ, मगदाले में
मन्दिर एम मनया देंगे ।
यहाँ हथकड़ी खीर पेड़ियों—
या पण्डा देंगा देंगे ॥

तुम मन जाना प्रमुख पुजारी
करने रहना निज दह्कार ।
हम पर मिलकर करे प्रार्थना
हो स्वभाव का मन्त्रोच्चार ॥

मन मजदुरता देवी देवी
प्रमुदित हो पनाय परदान ।
यह पहिली मजदुरता मने मे
भारत परना तुम मजदुरता ॥

भारत का ही राज विजय, तुम
विजय करी के मजदुरताये ।
मजदुरताये मजदुरताये ही हम पर
मजदुरताये, हा ! मन जायो ॥

विस्मृत की स्मृति

उधर गो - भक्त कहाता देश
इधर ये लाखों गायें कटें ।
उधर करतीं वैतरणी पार
इधर वे हाय ! छुरी से छटें ॥

उधर मचता है हाहाकार
इधर ये कदम न पीछे हटें ।
देखकर ये उलटे व्यवहार
हमारे हृदय शोक से फटें ॥

उधर तुम कहलाते गोपाल
इधर ये गौँँ दिन - दिन कटें ।
कहो, तुमही कह दो गोपाल
तुम्हें अब कौन नाम से रटें ? ॥

वचाने को तुमने गो - वंश
उठाया था गोवर्धन हाथ ।
किन्तु अब गोवध होता देख
क्यों नहीं आते हो तुम नाथ ? ॥

विष्णु की स्मृति

मनाते जन्म - दिवस ही रहे
कृष्ण ! तुम योनों आये नहीं ?
व्यर्थ क्यों भोग्य देख कर गये
कि "आइँगा मैं फिर भी नहीं ॥"

हृषा जब घर में पालक गया !
मनमते लगे कि आये कृष्ण ।
प्रभाये गाये लेकर नाम
मुद्दाम दर्शन दिया मधुसू ॥

पत्नी हूँ मेरुवानी यशस्त
पनाया पालक को मेरुवाव ।
पना घर - आँगन गौ हूँ मरु
हृषा परितनया हृदय निदाव ॥

विष्णु वह जैसे पदमे पया
हरी, मरुवों, मरुवों हो पया ।
मरी मरुवों का हृदय मरु
कृष्ण, मरुवत मे हृदयको पया ॥

मुकुल

छले जाते हैं यद्यपि नित्य
किन्तु हम करते हैं विश्वास ।
एक दिन आओगे तुम कृष्ण
दुष्ट-दल का करने को नाश ॥

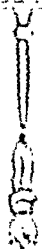
अभी भी यहाँ बहुत से कंस
मचाते हैं नित अत्याचार ॥
नष्ट होता प्यारा गोवंश
बढ़ा जाता पृथ्वी का भार ॥

तुम्हारे स्वागत के हित बने—
हुए हैं अब भी कारागार ।
घटायें नभ में काली धिरीं
वरसर्तीं देखो मूसलधार ॥

अँधेरा छाया है यह घना
जन्म का प्रस्तुत है सामान ।
यही है कृष्ण, जन्म का समय
वचन पूरा कर दो भगवान ॥

परिशिष्ट

श
ब्दा
र्व



फूल के प्रति

गुमान = अविमान, गर्व । सुमान =
फूल । कुञ्ज = सनातन । सम्मान = आदर ।
मधुप = भौरा । शपमान = निगादर ।
गुल = दुर्द, कष्ट ।

मुखभाषा फूल

शय्य = शयन शय । दिवस्वनेशायी = दृष्ट ज्ञानेश्वरी ।
गुजरी = जासी । सन्नास = सन्ना दुःख, दुःखी ।

फलद-शान्ति

आराधना = पूजा । आधना = उपसना । मेन-
नियम । शिवांग = सुशु शिवा । पशारे = शाये । महारा
= धकादक । संकीर्ण = शरी । प्रवीण = इनाश्वरी ।

फलद शय्य

जयान = जयि । कटनी = काकाद, शरी । मान-
अविमान ।

शुभ

शारीरिक, शरीर । सम्मान = मोह, शिवाश्वरी ।
शरीर = शरीर । शरीर = शरीर, शिवाश्वरी शरीर ।

सुकुल]

= गूँजना । पुरस्कार = इनाम । कोरा = केवल, सिर्फ़ ।
न्यूनता = कमी ।

चिन्ता

पथ = रास्ता । मचलना = अड़ जाना । कठिन =
सुशिकल । मार्ग = रास्ता । मञ्जिले = पड़ाव । तरंग =
लहर । व्रत-भंग = प्रतिज्ञा तोड़ना । निकट = नजदीक ।

प्रियतम से

परीक्षा = इम्तिहान । रूखा = कठोर । व्यवहार =
वर्ताव ।

मानिनि राधे !

आदर्श = लक्ष्य । साधे = साधना की । वृषभानु-
किशोरी = वृषभानु की लड़की । भाव-गगन = कल्पना
का आकाश । चकोरी = एक पक्षिणी, जो टकटकी
लगाकर चन्द्रमा को सारी रात देखा करती है ।
अलियाँ = सखियाँ । माधव = श्रीकृष्ण । मधुकर =
भौरा । गुञ्जे = गूँज । नख-शिख = सिर से पैर तक ।
भाता = अच्छी लगता । अविचल = न डिगनेवाली ।
सौभाग्य = अच्छी किस्मत । विलासी = लिप्त होना,
डूब जाना । गुण-गण = तारीफ़ें । नयन = आँखें ।
मृदु = कोमल । न्यौछावर = चढ़ाना, उत्सर्ग करना ।
तुच्छ = मामूली । लेखा = समझा । शीतल = ठण्डा ।
आदर्श = दृष्टान्त, कहानी । भाव = विचार, समझ ।

आहत की अभिलाषा

लेखा = समझा । अर्पण = सौंपना । इष्ट = अनुकूल ।
न्यारे = अलग । सुहृद = मित्र । धनेरा = बहुत । दूजा

= दूसरा । विफल = व्याकुल । पटल = पट, तड़ा ।
साक्षात् = शधिपार । सीन्य = सुन्दर । शयसर =
सौक्य । निःशयार्थ = शयार्थ-रहित । जेरी = दासी । शधि-
पार = प्रसाप । टीर = जगह । शय = शयार्थ, शय ।
भाये = इच्छा हो ।

जल-समाधि

कलक = शूली । निर्दयता = निष्कृपता । यानयता =
देवसी । सीन्य = शनिमान । चित्तरे = चिप्रकार । निषट =
पाप । अनुसार = तगह । शिला = पट्टान । सन्तोष =
समसी । उन्मत्ता = उल्लसुयता । शय = समाया ।
पलिष्ठ-नन = सुदीन शरीरपाया । गृह = पटोर ।
पेसुध = पेशोम । दीन = सुरीय । प्रकाश = रोशनी ।
समसी = सुपती सी । दिग्भ = सुगी दुर् । भन्ड = घोड़ी ।

मेरा नया धनधन

निर्दय = निरह । मयन्तु = दिसा दिग्सी मया-
वट से । शयन = समन । सुभा = समन । मेरा-नीर =
सीन्य के सीन्य । गृह = भट । साक्षात् = साक्षात् ।
उन्मत्ता = उन्मत्ता, सुगी । शयनिकी = शयनिकी ।
साक्षात् = साक्षात् । सुभा = सुभा । शयन = शयन ।
शयन = शयन । शयन = शयन । शयन = शयन ।
शयन = शयन । शयन = शयन । शयन = शयन ।
शयन = शयन । शयन = शयन । शयन = शयन ।
शयन = शयन । शयन = शयन । शयन = शयन ।
शयन = शयन । शयन = शयन । शयन = शयन ।

वालिका का परिचय

शाही = राजसी । दीप-शिखा = दीपक की लौ ।
घनी-घटा = घने वादल । ऊषा = प्रातः-सूर्य की किरणें ।
कमल-भृङ्ग = कमल में बन्द भौंरा । सुधाधार = अमृत
की धारा । ज्योति = प्रकाश । नयन = आँख । मनस्वी =
मन को वश में रखनेवाला । क्रीड़ापूर्ण = खेल-कूद से
भरी हुई । वाटिका = फुलवारी । नाटिका = नाटक,
दृश्य । मोद = खुशी । क्षमाशीलता = माफ़ कर देने-
वाला । जिनवर = जैनों में श्रेष्ठ ।

इसका रोना

सुहाता = अच्छा लगता । छवि = शोभा । मुक्ता-
वली = मोती की लड़ । दृष्टि = देखना, आँख । आ-
त्मीय = अपनापन । बहुधा = अक्सर । चीख = चिल्ला
हट । निर्भर = अवलम्बित । क्रिया = काम ।

भाँसी की रानी

सिंहासन = राज्य । भृकुटी = भौंह । गुमी =
खोयी । आज़ादी = स्वतन्त्रता । कीमत = मूल्य, दाम ।
बुन्देले = बुन्देलखण्ड वासी । हरवोलों = चारण, भाट ।
मर्दानी = मर्दों के समान, वीर । मुँहवोली = मुँहलगी,
ठीठ । पुलकित = प्रसन्न । व्यूह = सेना सजाने का तरीका ।
सैन्य = फौज । आराध्य = पूजनीय । वैभव = धन-सम्पत्ति ।
सगाई = व्याह । सुभट = वीर । विरुदावली = कीर्ति-गाथा ।
चित्रा = अर्जुन की स्त्री । मुदित = प्रसन्न । कालगति =
समय का संयोग । विधि = विधाता, ब्रह्मा । डलहौड़ी =
भारतवर्ष का तत्कालीन गवर्नर जनरल । लाघारिस =

जिसका कोई उपायधिकारी न हो । विमानो = कृत्रिमता ।
 अनुनय-विनय = प्रार्थना । विकट = भयानक । माया =
 माला । गुण = विन्ता । वेङ्गल = क्या हुआ । सर्वेधान = कुले
 तीर से । जेवर गहने । विरम स्तम्भ, मार्मिक ।
 आश्रित = दुकसाया हुआ, धारण । शयमान = पेशजनी ।
 स्नातन = पुलाया । उपर्यानी = उट लगी हुई । जूने =
 अपमथ । कुशानी = पतिदान । सेपिटनेन्ट पीयर =
 रंगेनी सेना का एक सेनाध्यक्ष । इन्ड = मन्त्री । शयमान
 = जो दवापरी के न हो । निम्नर = परावर । जनक
 मिथ = रंगेनी सेना का एक सेनापति । हा मोज =
 रंगेनी सेना का एक सेनापति । स्वष्ट = विपत्ति ।
 पीरगति = मृत्यु । दिव्य शरीरिकर, सुन्दर । नेत्र =
 शक्ति, ज्योति । मनुज = मनुष्य । अपिनाली = जिसका
 नाम न हो सके । मरुतारी = शक्तिमान से भरी ।
 स्नातक = वादनाम । समिट न मिटने वाली ।

गणों की कुर्तानी

सहित = विहारी । जन = वादक । पदा = मनुष्य ।
 समन = समानमान । पुण्य = फल । सुहार = सुन्दर समने
 वाली । पुनो = पुर्नित्त । कन्दु = भार । साक्षिण = साक्ष्य-
 वाली । मण्डल = मण्डल समन । शीतल = मण्डल विहारी
 का एक विशेष, अथवा कर्तु मण्डल समनकी से (सुन्दर-
 मानी समनकाएल से) कुर्तानी से हुए कर्तु शीतल मण्डल
 का शीतल कोई समन न रहे, उपाय, जो मण्डल विहारी
 समन समनकाएल समने अथवा कर्तु शीतल शीतल

मुकुल]

व्रत कहते हैं । कसाला = कष्ट । प्रण = प्रतिज्ञा, निश्चय ।
चुनौती = ललकार ।

मेरी कविता

तत्काल = उसी समय । जालियाँ वाला = पञ्चाव
का प्रसिद्ध शहीदी बाग, जहाँ जनरल डायर ने निहत्थी
जनता पर गोलियाँ चलायीं थीं । फायर = गोली
चलाना । यथा = जैसा । मग्न = डूबा हुआ । केशपाश =
वालों का समूह । शून्य-दृष्टि = सूनी आँखें । खिन्नमना =
उदास । भाल = ललाट । क्लेश = दुःख । रम्य = सुन्दर,
रमणीय । क्रम-क्रम = धीरे-धीरे ।

राखी

नूतन = नया । भुजदण्ड = हाथ । आख्यान =
कहानी । राखी-बन्द = राखी से बँधा हुआ । निस्तेज
= वेदम, मुर्दा । साखी = साक्षी, गवाह । जलियाँ का
गोलन्दाज़ = मशहूर गोली चलाने वाला डायर ।
अङ्कित = लिखा हुआ । मार्शल-ला = फौजी क़ानून ।

विजयादशमी

धर्मभीरु = धर्म से डरनेवाला । सात्विक = शुद्ध ।
निश्छल = छल रहित । करुणा का धाम = दूसरे के दुख
से दुखी होने वाला । असहाय = जिसकी सहायता
करने वाला कोई न हो । विधाता = ब्रह्मा, ईश्वर ।
वाम = बाँया, विरुद्ध । सहचरी = पत्नी । सम्राट = बाद-
शाह । रक्तक = रक्षा करने वाला । राक्षस-सैन्य =
राक्षसों की सेना । सबल = बलवान । प्रहरी = पहरे-
दार । सिन्धु = समुद्र । विराट = बड़ा भारी । फकीरी =

विष्णुशक्ति का-न्या । पराधीनता = गुलामी । भीरु =
कायर । अथवाप्यर्थ = निर्या । घमसान = भयानक ।

मातृ-मन्दिर में

मेघ = छाँव । ध्यान = वाद । ऊनय = जलसा ।
प्राविन्दी = यमुना । समारोह = धूमधाम । पर्याभूयण =
महान-व्यथा । मनुष्य = शायर । मोदय = सुखी में
भरी । मिश्रयाता = रोक देता । प्रेमोन्मत्ता = प्रेम में
पागल । महानता = महानता । भय = शरीरिक, सुन्दर ।
सन्तान = पत्नी । महान = पढ़ा । सन्तान = विस्मय ।
स्वान्त-प्रभाव = स्वाधीनता का स्वभाव । जगती =
दुनिया । पद-पद्म = पैरों की पूजा । धर्मिक्यन =
शक्तियों, स्वागत । पार्लियेण्ट = कानून बनाने वाली
सभा । जेन = गैल, मैदान ।

मातृ-मन्दिर में

स्वमित = दुखी । पद-पद्म = पैरों की पूजा ।
मातृ-मन्दिर = माता का मन्दिर । द्वाज = दुर्गा ।
जगत = दुर्गा । दुर्गा = म शक्ति कोण । मार्ग = रास्ता ।
शोषण = सीढ़ी । पाद = पादा । कर्मगत = सुन्दर
गीत । पद-पद्म = पैरों की पूजा ।

मातृ-मन्दिर में

स्वमित = दुखी । जगत = दुर्गा । मार्ग = रास्ता ।
शोषण = सीढ़ी । पाद = पादा । कर्मगत = सुन्दर
गीत । पद-पद्म = पैरों की पूजा ।

मुकुल]

भएडे की इङ्जत में

इच्छुका = अभिलाषिणी । कौमी = राष्ट्रीय । शीघ्र
सिर ।

मेरी टेक

आन = टेक । अन्धेर = अन्याय ।

विदाई

पधारो = जाओ । शुभचिन्तक = भला चाहने वा

विदा

रौरव = नारकीय । गौरव = आदर । स्पष्ट = सा
पावन = पवित्र । प्रफुल्ल = प्रसन्न । मुद्रा = चेष्टा, आ

स्वागत

उत्सुक = उत्कण्ठित । अर्च्य = अञ्जलि । दिवसे
सूर्य । वन-श्री = वनकी शोभा । हिंसा = मार
नरनाह = राजा । उन्मत्त = पागल । गर्विष्ठ =
अत्याचार = अन्याय । मर्यादा = सीमा । चिरजी
बहुत दिनों तक जीने वाली । सात्विक = प
उद्यान = बगीचा । वृष्टियों = गलतियों ।

स्वागत-गीत

भविष्य = आने वाला समय । मर्म = श्री
मतलब । मुराद = इच्छाएँ । आवाद होना =

भिष्कारियों का-सा । परार्थीनता = गुणार्थी । भीरु =
कायर । अथलापै = स्थिर्यो । प्रमस्मान = भयानक ।

मातृ-मन्दिर में

मेघ = शानि । ध्यान = याद । उत्तय = उत्तया ।
काकिन्दी = यमुना । समारोह = धूमधाम । पराभूषण =
गहना-रूपड़ा । मनुहार = शायर । मोदमय = खुशी से
भरी । भिक्षुवाता = रांक देता । प्रेमोन्मत्ता = प्रेम में
पायाल । महानता = बहुप्यन । भव्य = अतीतिक, सुन्दर ।
सन्मान = पद्या । महान = पद्या । स्वग्नाज = सिग्नीर ।
ध्यातन्त्र-धनान = शाजादी का सवेरा । जगती =
दुनिया । पद-सन्दन = पैरों की पूजा । अग्निमन्दन =
खलाओं, स्वागत । पार्लेमेण्ट = पानून बनाने वाली
सभा । पौत्र = पौत्र, मंदान ।

मातृ-मन्दिर में

अभिध = दुर्गी । पद-पङ्कज = पैर लयी पत्रण ।
मातृ-मन्दिर = माता का मन्दिर । द्यौ = दुर्गीप ।
समय = दुर्गी । दुर्गम = न जाने योग्य । मार्ग = रास्ता ।
सोपान = सीढ़ी । पाल = पाजा । पालमान = सुन्दर
गीत । पालपाद = बिल्ली प्रायेण ।

मातृ-मन्दिर में

हस्तता = हस्तोरी । हस्त = हस्तों भागड़ा । कार्दि-
य = सुन्दर । कर्ज = कर्ज । भू = भूमि । गार्गी =
सुन्दरिणी, सुल, पदिक ।

ओभाबन्धु आश्रम, इलाहाबाद

से मँगाइये

बिलकुल नवीन !!

१—विवाह-समस्या और स्त्री-जीवन

(श्रीरामनाथ लाल 'सुमन' लिखित)

२—पाप और पुण्य (मुक्त-लिखित,

पत्रों के रूपमें एक मौलिक उपन्यास)

३—प्रतिमा के पत्र (मुक्त-लिखित मौलिक उपन्यास)

अन्य प्रकाशित पुस्तकें

१—स्त्री के पत्र	१)	८—मुकुल	१)
२—सामाजिक रोग	१)	९—व्रतोत्सव विधान ॥=)	
३—पतझड़ (उपन्यास)	१)	१०—पद्य-पारिजात ॥=)	
४—रेखा	॥)	११—सन्यासिनी (उप०) ॥)	
५—शंखनाद	॥)	१२—तपस्विनी (उप०) १)	
६—वेलपत्र	॥)	१३—अभिज्ञाप	।)
७—धुँधले चित्र	॥)	१४—दरिद्र कथा	।)

ओभा-बन्धु-आश्रम

इलाहाबाद

